Postal Reg. No.GDP45/2023-2025

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم وعلی عبدہ المسیح الموعود

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 10
अंक - 28
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

14 मोहर्रम, 1446-47 हिज्री कमरी, 10 वफ़ा 1404 हिज्री शम्सी, 10 जुलाई 2025 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ

(सूरः बकरः, आयत : 198)

अनुवाद : हज कुछ निश्चित महीनों में होता है, अतः जिसने इन महीनों में हज करने का संकल्प किया, तो हज के दौरान न तो यौन-संबंध होगा, न अनैतिकता होगी और न ही झगड़ा होगा।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

कोई व्यक्ति जिसे किसी अत्याचार से संबंधित किसी बात पर गवाह बनाया जाए, तो उसे गवाह नहीं बनना चाहिए

हज़रत नुअमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि मेरी मां ने मेरे पिता से कहा कि नुअमान के लिए अपने माल से कुछ दान (हिबा) कर दो। (उन्होंने पहले इन्कार किया) फिर उन्हें विचार आया और उन्होंने मेरे लिए हिबा कर दिया। मेरी मां ने कहा: मैं तब तक संतुष्ट नहीं होऊंगी जब तक आप नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को गवाह नहीं बनाओगे। तो उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और उस समय मैं बच्चा ही था और मुझे नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के पास ले गए और कहा : इसकी मां, जो रवाहा की बेटी हैं, मुझसे इसकी खातिर कुछ दान करने की मांग कर रही हैं। आपने (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) पूछा : क्या इसके सिवा तुम्हारे और भी बच्चे हैं? उन्होंने कहा: हां। (नुअमान बयान करते हैं) मैं समझता हूं, आपने (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) फरमाया: मुझे किसी अन्यायपूर्ण बात पर गवाह न बनाओ।

और अबू हरीज़ ने शअबी से यूं वर्णन किया है: "मैं किसी ज़ुल्म की बात पर गवाही नहीं देता।"

(सही बुख़ारी, जिल्द 4, किताब-अश-शहादात)

★ ★ ★

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबियों में से कोई भी मुरतद (धर्मत्यागी) नहीं हुआ, जबकि अन्य नबियों के अनुयायियों में हज़ारों ऐसे लोग होते थे जो बाद में मार्ग से भटक जाते थे।

मूल बात यह है कि मुरब्बी की आंतरिक शक्तियों और गुणों का प्रभाव होता है। जितना अधिक कोई मार्गदर्शक प्रभावशाली और पूर्ण होता है, उतनी ही उसकी दी हुई शिक्षा और प्रशिक्षण का प्रभाव सुदृढ़ और स्थायी होता है।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

जब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जन्म हुआ तो मक्का के लोग ऐसे थे जैसे कोई शिशु जो दूध पीने का मोहताज होता है, अर्थात् वे पूर्ण रूप से पालन-पोषण के ज़रूरतमंद थे। वे हिंसक और जंगली जीवों की भाँति जीवन व्यतीत कर रहे थे। आपने एक माँ की तरह उन्हें दूध पिलाकर उनका पालन-पोषण किया। फिर 'रहमानियत' का प्रकाश डाला ऐसे साधन प्रदान किए जिनमें मनुष्य की कोई निजी कोशिश शामिल न थी। आपने उन्हें क़ुरआन जैसी महान नेमत और अपना अनुपम आदर्श प्रदान किया। फिर 'रहीमियत' का भी प्रकट रूप दिखाया कि जो प्रयास किए गए, उन पर परिणाम आधारित किए गए। उनके ईमान को स्वीकार किया गया और उन्हें ईसाइयों की भाँति गुमराही में नहीं पड़ने दिया गया, बल्कि उन्हें स्थिरता और दृढ़ता प्रदान की गई। प्रयास में यह बरकत होती है कि ख़ुदा तआला मनुष्य को स्थिर कर देता है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा में से कोई भी धर्मत्यागी नहीं हुआ, जबकि अन्य नबियों के अनुयायियों में हज़ारों हुए। हज़रत मसीह (यीशु) के तो एक ही दिन में पाँच सौ अनुयायी धर्म त्याग बैठे, और जिन पर अत्यधिक विश्वास और भरोसा था, उनमें से एक ने तो तीस दीनार लेकर उन्हें पकड़वा दिया और दूसरे ने तीन बार शाप देकर इंकार किया।वास्तविक बात यही है कि मार्गदर्शक की आंतरिक शक्तियों का प्रभाव होता है। जितना अधिक मार्गदर्शक प्रभावशाली और पूर्ण होगा, उतनी ही उसकी दी हुई शिक्षा स्थायी और मजबूत होगी।यह हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र शक्ति की पूर्णता और सर्वोच्चता का एक और प्रत्यक्ष प्रमाण है कि आपके शिक्षित समुदाय में ऐसा दृढ़ संकल्प और स्थिरता थी कि वे आपके लिए अपने प्राणों और धन को भी निछावर करने से पीछे नहीं हटे और मैदान में अडिग होकर खड़े हुए। और हज़रत मसीह (यीशु) की कमजोरी का यह स्पष्ट प्रमाण है कि जिन लोगों को उन्होंने तैयार किया, वही उन्हें पकड़वाने, जान से मरवाने और शाप देने वाले साबित हुए।संक्षेप में, यह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की 'रहीमियत' का प्रभाव था कि सहाबा में स्थिरता और दृढ़ता उत्पन्न हुई। फिर मालिक-ए-यौम-उद्दीन (कार्यफल के दिन के स्वामी) का व्यावहारिक प्रकट स्वरूप सहाबा की जीवनियों में इस रूप में दिखा कि ख़ुदा तआला ने उनमें और दूसरों में भेद कर दिया। और जो ख़ुदा तआला का ज्ञान और प्रेम उन्हें इस संसार में दिया गया, वही उनकी दुनिया में ही प्राप्त हुई इनाम थी।

(मल्फ़ूज़ात, खंड 2, पृष्ठ 71 से 72, संस्करण 2018, क़ादियान)

★ ★ ★

एक सच्चा मौमिन अपने सभी इन्द्रियों की रक्षा करता है अर्थात् वह अपने कानों, आँखों, मुँह और अपनी गुप्त इन्द्रिय की भी सुरक्षा करता है। न वह किसी की चुग़ली सुनता है, न ही दूसरों की संपत्ति पर लोभ से नज़र डालता है, और न ही कोई अश्लील या अनैतिक कार्य करता है

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, सूरह हज्ज की आयत 6 और 7 की व्याख्या में फ़रमाते हैं:

"फिर मौमिन इससे भी आगे बढ़ते हैं और उस स्थान तक पहुँच जाते हैं कि वे अपने सभी इन्द्रियों की रक्षा करने लगते हैं । अर्थात् वे अपने कान, आँखें, मुँह और अपनी गुप्त इन्द्रियों की भी रक्षा करते हैं। न वे चुग़ली सुनते हैं, न दूसरों की संपत्ति को लालच की दृष्टि से देखते हैं और न ही वे अनैतिकता में लिप्त होते हैं। हाँ, अपनी पत्नियों से संबंध बनाना वैध है, इसी प्रकार उन स्त्रियों से भी, जो उनके दाहिने हाथ की मिल्कियत में आईं हों। ऐसे लोगों पर धार्मिक दृष्टि से कोई दोषारोपण नहीं होता।"

'दाहिने हाथ की मिल्कियत' (ما ملکت ایمانکم) के विषय में यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि कुछ लोग इसमें दासियों को भी सम्मिलित कर लेते हैं, और कुछ उन स्त्रियों को, जिन्हें कमज़ोर जातियों पर छापा

शेष पृष्ठ 8 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

जब तक अल्लाह चाहेगा, तुम में नबुव्वत क़ायम रहेगी। फिर वह उसे उठा लेगा और नबुव्वत के तरीक़े पर ख़िलाफ़त क़ायम होगी। फिर जब अल्लाह चाहेगा, वह इस नेमत को भी उठा लेगा। फिर उसकी क़िस्मत के अनुसार एक पीड़ादायक बादशाहत क़ायम होगी। जब यह दौर समाप्त होगा, तो इससे भी अधिक ज़ालिम बादशाहत क़ायम होगी, जब तक अल्लाह चाहेगा। फिर अल्लाह उसे भी उठा लेगा। इसके बाद दोबारा नबुव्वत के तरीक़े पर ख़िलाफ़त क़ायम होगी। और यह कहकर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम चुप हो गए। (अल्-हदीस)

जब तक हम ख़िलाफ़त से जुड़े रहेंगे, अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के वारिस बनते रहेंगे।

"ख़ुदा ने मुझसे मुख़ातिब होकर फ़रमाया कि मैं अपनी जमाअत को सूचित कर दूँ कि वे लोग जो ईमान लाए। ऐसा ईमान जो दुनिया की मिलावट से पाक है, और वह ईमान जो निफ़ाक़ या बुज़दिली से मलिन नहीं है, और वह ईमान जो आज्ञापालन के किसी भी स्तर से वंचित नहीं है। ऐसे लोग ही ख़ुदा को प्रिय हैं। और ख़ुदा फ़रमाता है कि वही लोग हैं जिनका क़दम सच्चाई का क़दम है।"

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

इसलिए हमें चाहिए कि हम ख़िलाफ़त से जुड़े रहें और ख़िलाफ़त के निज़ाम को क़ायम रखने के लिए हर प्रकार की क़ुर्बानी देने को तत्पर रहें। यदि हम ऐसा करते रहेंगे तो क़यामत तक हम ख़िलाफ़त से जुड़े रहेंगे, हमारी पीढ़ियाँ उससे जुड़ी रहेंगी और इसके फ़ैज़ से लाभ उठाती रहेंगी।

ख़लीफ़ा-ए-वक़्त तो रातों को उठ-उठकर अपनी नमाज़ों में जमाअत के अफ़राद के लिए दुआ करता है। क्या कोई बादशाह ऐसा करता है? अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त को जारी रखने के लिए और उससे फ़ैज़ पाने के लिए हमें यह हिदायत दी है कि जो लोग इस ख़िलाफ़त से जुड़े रहेंगे वे अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करेंगे और उनके आदेशों पर अमल करेंगे।

अल्लाह तआला की इबादत को सदा अपने समक्ष रखें, क्योंकि पूर्ण रूप से अल्लाह की आज्ञा मानने वाले वही होते हैं जो हर समय अल्लाह को याद रखते हैं और उसकी उपासना करते हैं। सदा स्मरण रहे कि ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से जुड़ने में ही अब संसार की वास्तविक सुरक्षा निहित है और ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया उस पवित्र व्यवस्था की निरंतरता है, उस वचन की निरंतरता है जो अल्लाह तआला ने पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से किया था।

ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया की यह कड़ी वह है जो सीधे अल्लाह तआला की ओर ले जाती है।

निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त का महत्त्व, उसकी बरकतें और इससे जुड़ी इलाही ताईदों का गहन बोध से भरा हुआ कथन।

डॉक्टर कर्नल पीर मुहम्मद मुनीर साहिब, पूर्व प्रशासक फ़ज़्ल उमर अस्पताल रबवा, तथा श्रीमती सलीमा ज़ाहिद साहिबा का सत्कारपूर्वक उल्लेख और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 30 मई 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ؕ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۵۴﴾ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۵۵﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۵۶﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۵۷﴾

(النور:54تا57)

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत-ए-अहमदिया में ख़िलाफ़त का निज़ाम स्थापित हुए एक सौ सत्रह वर्ष बीत चुके हैं।

1908 ईस्वी में यह निज़ाम स्थापित हुआ और अल्लाह तआला के वादों तथा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार यह क़ायम हुआ। अतः यह अल्लाह तआला का बहुत बड़ा उपकार है जमाअत-ए-अहमदिया पर कि हम उस प्रणाली का हिस्सा हैं जिसकी भविष्यवाणी अल्लाह तआला ने की थी कि मसीह और महदी की आमद के बाद इस्लाम के पुनरुत्थान का एक युग आरंभ होगा और उसी प्रणाली में ख़िलाफ़त का युग भी शुरू होगा, जिसके बारे में पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्पष्ट भविष्यवाणी की थी। पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वह भविष्यवाणी जो हदीस में वर्णित है, इस प्रकार है:

"तुम में नबुव्वत क़ायम रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा। फिर वह उसे उठा लेगा और नबुव्वत के तरीक़े पर ख़िलाफ़त क़ायम होगी। फिर अल्लाह तआला जब चाहेगा इस नेमत को भी उठा लेगा। फिर उसकी तक़दीर के अनुसार पीड़ादायक बादशाहत क़ायम होगी। जब यह दौर समाप्त होगा तो उससे भी कठोर और अत्याचारी बादशाहत क़ायम होगी जब तक अल्लाह चाहेगा। फिर अल्लाह उसे भी उठा लेगा। इसके बाद दोबारा नबुव्वत के तरीक़े पर ख़िलाफ़त क़ायम होगी।" और यह कहकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चुप हो गए।

(मुस्नद अहमद बिन हम्बल, जिल्द 6, सफ़ा 285, हदीस 18596, मक्तबा आलमुल-कुतुब, बेरूत)

यह भविष्यवाणी थी पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की, जिसके अनुसार अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रकट होने के बाद इस्लाम के पुनरुत्थान का एक नया युग शुरू हुआ और आपके विसाल के बाद ख़िलाफ़त का युग भी आरंभ हुआ।

जो आयतें मैंने पढ़ीं, उनका अनुवाद इस प्रकार है:

"और उन्होंने अल्लाह तआला की पक्की क़समें खाईं कि यदि तू उन्हें आदेश देगा तो वे अवश्य ही निकल खड़े होंगे। कह दे कि क़समें न खाओ, रीति के अनुसार आज्ञापालन करो। निःसंदेह अल्लाह जो तुम करते हो, उससे सदैव अवगत रहता है। कह दो कि अल्लाह की आज्ञा का पालन करो और रसूल की आज्ञा का भी। यदि तुम फिर जाओ तो उस पर वही ज़िम्मेदारी है जो उस पर डाली गई है, और तुम पर वही ज़िम्मेदारी है जो तुम पर डाली गई है। और यदि

तुम उसकी आज्ञा का पालन करोगे तो मार्गदर्शन पाओगे। और रसूल पर केवल स्पष्ट रूप से सन्देश पहुँचाने की ज़िम्मेदारी है।

"जो लोग तुम में से ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, अल्लाह तआला ने उनसे वचन लिया है कि वह उन्हें धरती में ख़लीफ़ा बनाएगा, जैसे वह उनके पूर्वजों को बना चुका है, और उनके लिए उनके धर्म को, जिसे उसने उनके लिए पसंद किया है, स्थायित्व प्रदान करेगा, और उनके भय के बाद उन्हें शांति की अवस्था में ले आएगा। वे मेरी उपासना करेंगे और मेरे साथ किसी को साझी नहीं ठहराएँगे। और जो इसके बाद भी कृतघ्नता करेगा, तो यही लोग हैं जो अवज्ञाकारी हैं। और नमाज़ क़ायम करो, ज़कात अदा करो और रसूल की आज्ञा का पालन करो ताकि तुम पर दया की जाए।"

इन आयतों से स्पष्ट है कि अल्लाह तआला ने मुसलमानों से यह वादा किया है कि तुम में ख़िलाफ़त का निज़ाम क़ायम होगा। ख़ुलफ़ा-ए-राशेदीन का युग तीस वर्षों तक रहा। अब केवल तीस वर्षों के लिए अल्लाह का वादा नहीं था,

बल्कि यह पूर्ण वादा था और उसकी व्याख्या हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्वयं कर दी, जैसा कि मैंने हदीस में पढ़ा कि पहले नबुव्वत के तरीक़े पर ख़िलाफ़त रही, फिर बादशाहत हुई, फिर अत्याचारी बादशाहत आई, फिर नबुव्वत के तरीके पर ख़िलाफ़त पुनः स्थापित होगी और यह मसीह मौऊद के समय में क़ायम होगी।

अतः हमें अहमदियों को यह बात सदा स्मरण रखनी चाहिए कि हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार कर अल्लाह के आदेशों पर चलने का एक संकल्प किया है, और उस संकल्प की एक शर्त यह है कि हम सदैव ख़िलाफ़त से जुड़े रहेंगे। इसी ओर अल्लाह तआला ने हमारा ध्यान दिलाया है, बल्कि यह शिक्षा दी है, और इस संबंध में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का भी स्पष्ट कथन है।

जब तक हम ख़िलाफ़त से जुड़े रहेंगे, अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के वारिस बनते रहेंगे।

किन्तु इसके लिए भी शर्तें हैं, जैसा कि अल्लाह तआला ने इन आयतों में स्पष्ट किया है। अतः उन शर्तों को पूरा करना भी हमारे लिए आवश्यक है।

इन शर्तों की व्याख्या से पहले, ख़िलाफ़त के जारी रहने के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जो कथन है, वह भी मैं प्रस्तुत करता हूँ। आपने अपनी प्रसिद्ध पुस्तिका अल-वसीयत में फ़रमाया:

"ख़ुदा तआला दो प्रकार की क़ुदरत प्रकट करता है:

(1) पहली, जब वह नबियों के हाथों से अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है।

(2) दूसरी, उस समय जब नबी की मृत्यु के पश्चात कठिनाइयों का सामना होता है, शत्रु प्रबल हो जाते हैं और सोचते हैं कि अब यह कार्य नष्ट हो गया है, और निश्चित मान लेते हैं कि अब यह जमाअत समाप्त हो जाएगी; यहाँ तक कि स्वयं जमाअत के लोग भी संदेह में पड़ जाते हैं, उनकी कमरें टूट जाती हैं और कई अभागे मुर्तद हो जाते हैं। तब ख़ुदा तआला दूसरी बार अपनी ज़बरदस्त शक्ति प्रकट करता है और गिरती हुई जमाअत को संभाल लेता है। अतः जो अंत तक धैर्य करता है, वह ख़ुदा तआला के इस चमत्कार को देखता है।

जैसा कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के समय हुआ, जब पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु को असामयिक समझा गया, और कई बंजारों और अज्ञानी ग्रामीणों ने मुर्तद होने का मार्ग अपनाया। सहाबा भी दुःख के कारण जैसे पागल हो गए। तब ख़ुदा तआला ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को खड़ा कर अपनी क़ुदरत का पुनः प्रदर्शन किया और इस्लाम को विनाश से बचा लिया। और उस वादे को पूरा किया जो उसने फ़रमाया था। 'और निश्चय ही हम उनके लिए उनके धर्म को, जिसे हमने उनके लिए पसंद किया है, स्थायित्व प्रदान करेंगे और उनके भय के बाद उन्हें शांति की अवस्था में ले आएँगे।'

ऐसा ही हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के समय हुआ जब वह मिस्र और कनआन की राह में, उस मंज़िल तक पहुँचाने से पहले ही, मृत्यु को प्राप्त हुए जैसा वादा किया गया था। और उनके देहांत से बनी इस्राईल में एक बड़ा मातम व्याप्त हुआ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

...अतः ऐ प्रियजनों! जब से परमप्रभु की यह प्राचीन परंपरा रही है कि वह दो शक्तियाँ दिखाता है, जिससे विरोधियों की दो झूठी खुशियाँ रौंद दी जाएँ। सो अब यह संभव नहीं कि ख़ुदा तआला अपनी इस सनातन परंपरा को छोड़ दे। अतः मेरी इस बात से, जो मैंने तुमसे कही, शोकित मत होओ और तुम्हारे हृदय व्याकुल न हों, क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी शक्ति का देखना भी आवश्यक है और उसका आना तुम्हारे लिए कल्याणकारी है, क्योंकि वह स्थायी होगी।

यहाँ भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसी हदीस के अनुसार एक स्थायी शक्ति की ओर संकेत कर दिया है, ''जिसकी श्रृंखला क़ियामत तक कभी नहीं टूटेगी। और वह दूसरी शक्ति तब तक नहीं आ सकती।'' आपने फ़रमाया कि दूसरी शक्ति नहीं आ सकती ''जब तक मैं न चला जाऊँ। परन्तु जब मैं चला जाऊँगा, तब ख़ुदा तआला उस दूसरी शक्ति को तुम्हारे लिए भेज देगा जो सदैव तुम्हारे साथ रहेगी, जैसा कि ब्राहीन-ए-अहमदिया में ख़ुदा तआला का वचन है। और वह वचन मेरी हस्ती के विषय में नहीं है, बल्कि वह तुम लोगों के विषय में है, जैसा कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि 'मैं इस जमाअतको जो तेरा अनुसरण करती है, क़ियामत तक दूसरों पर विजय दूँगा।' सो आवश्यक है कि मेरी जुदाई का दिन तुम पर अवश्य आए, जिससे उसके बाद वह दिन आए जो उस शाश्वत वचन का दिन है। हमारा ख़ुदा तआला अपने वचनों में सच्चा, विश्वसनीय और सत्यप्रिय है। वह तुम्हें वह सब कुछ दिखाएगा जिसका उसने वचन दिया है। यद्यपि ये दिन संसार के अंतिम दिनों में से हैं और बहुत सी आपदाएँ हैं जिनके अवतरित होने का समय है, फिर भी यह संसार तब तक बना रहेगा जब तक वे सभी बातें पूर्ण न हो जाएँ जिनकी ख़ुदा तआला ने सूचना दी है।

मैं ख़ुदा तआला की ओर से शक्ति के रूप में प्रकट हुआ हूँ और मैं ख़ुदा तआला की साकार शक्ति हूँ, और मेरे बाद कुछ और व्यक्ति होंगे जो दूसरी शक्ति के प्रतीक होंगे। अतः तुम ख़ुदा तआला की दूसरी शक्ति की प्रतीक्षा में एकत्र होकर प्रार्थना करते रहो। और आवश्यक है कि हर देश में नेक लोगों की मंडली एकत्र होकर प्रार्थना में लीन रहे, जिससे दूसरी शक्ति आकाश से अवतरित हो और तुम्हें दिखाए कि तुम्हारा ख़ुदा तआला कितना सामर्थ्यवान है।''

(रिसाला अल-वासीयत, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 20, पृष्ठ 304-306)

यहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह भी फ़रमाया कि दूसरी शक्ति की प्रतीक्षा में एकत्र होकर प्रार्थना करते रहो और हर देश में नेक लोगों की जमाअत मिलकर दुआ करें। उस समय जब आपने यह इरशाद फ़रमाया था, भारत में ही जमाअत-ए-अहमदिया मौजूद थी और संभवतः कुछ गिने-चुने लोग ही बाहर होंगे, किन्तु आपने इस भविष्यवाणी को एक विशेष रूप में इस तरह भी फ़रमाया कि ''हर देश'' में ये प्रार्थनाएँ होती रहें। यानि भविष्य में ऐसा समय आएगा जब जमाअत-ए-अहमदिया संसार भर में फैल जाएगी।

और आज हम वही युग देख रहे हैं, जब जमाअत-ए-अहमदिया संसार भर में फैली हुई है, और हर स्थान पर ख़िलाफ़त के साथ वफ़ादारी, प्रेम और स्नेह का सम्बंध स्पष्ट दिखाई देता है, जो दूर-दराज़ के देशों में रहने वालों में भी है।

और ख़िलाफ़त-ए-ख़ामिसा (पाँचवीं ख़िलाफ़त) के निर्वाचन में भी आपने देखा कि कैसे संसार के कोने-कोने में फैले हुए लोगों ने एकजुट होकर ख़िलाफ़त के साथ जुड़ने का संकल्प लिया और बैअत की। और यह बैअत, इन्शा अल्लाह, भविष्य में भी कायम रहेगी। लोग करते रहेंगे, और आने वाले समय में भी ख़ुदा तआला हमें अपनी कृपाओं से नवाजता रहेगा क्योंकि यह ख़ुदा तआला का वादा है। यह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी है। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ओर से भी, ख़ुदा तआला से जानकारी प्राप्त कर, शुभ सूचना का सन्देश है।

अतः हमें चाहिए कि हम ख़िलाफ़त के साथ जुड़े रहें और ख़िलाफ़त के निज़ाम की स्थापना के लिए हर प्रकार की बलिदानी भावना से तैयार रहें। यदि हम इसी प्रकार कार्य करते रहेंगे तो हम क़ियामत तक ख़िलाफ़त से जुड़े रहेंगे। हमारी पीढ़ियाँ इससे जुड़ी रहेंगी और इसके अनुग्रहों से लाभान्वित होती रहेंगी।

कुछ लोगों का विचार है कि संभव है कि जमाअत-ए-अहमदिया में भी ख़िलाफ़त मलकियत (राजतंत्र) में परिवर्तित हो जाए, किन्तु ख़ुदा तआला का वचन यह है। और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी

तथा वह हदीस, जिसे मैंने अभी पढ़ा है, और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वाणी भी इस ओर संकेत करती है। कि जमाअत-ए-अहमदिया की जो ख़िलाफ़त है, वह इन्शा अल्लाह, रूहानियत (आध्यात्मिकता) की ख़िलाफ़त ही रहेगी और उसका सिलसिला क़ियामत तक जारी रहेगा। कभी ऐसा समय नहीं आएगा जब कहा जाए कि इसमें मलकियत (राजशाही) आ गई है। कुछ फितना परस्त (विरोधी) लोग यह कहना शुरू कर देते हैं कि जमाअत-ए-अहमदिया में मलकियत उत्पन्न हो गई है। किन्तु यह कभी नहीं होगा। यह खुदा तआला का वचन है कि इन्शा अल्लाह सदा रूहानी ख़िलाफ़त ही कायम रहेगी। खुदा तआला ने वादा किया है कि तुम्हारे भीतर भी वैसे ही ख़िलाफ़त स्थापित होगी जैसे पूर्वजों के भीतर थी, और वह ख़िलाफ़त किसी राज्यशाही की नहीं थी, बल्कि रूहानियत की ख़िलाफ़त थी, जिसकी मिसाल खुदा तआला ने दी है। क़ुरआन मजीद में वर्णित नबियों के इतिहास से हमें यही पता चलता है कि वह एक ऐसा निज़ाम था जो सीधे खुदा तआला की ओर से प्रदान किया गया था। लेकिन खुदा तआला ने एक दूसरा व्यवस्था भी निर्मित किया जो ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के युग से आरंभ हुआ और वह अब तक निरंतर आगे बढ़ रहा है।

एक बार हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इस विषय पर एक लेख लिखा। उनका विचार यह था कि संभव है कोई युग आए जब मलकियत का निज़ाम आ जाए। जब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को यह जानकारी मिली तो आपने इस बात का अत्यंत तीव्र खंडन किया, प्रबल रूप से उसका खंडन किया और फ़रमाया कि जब तक रूहानियत और तक़्वा (धार्मिकता) कायम है, जमाअत-ए-अहमदिया में मलकियत नहीं आ सकती।

(स्रोत: अल-फ़ज़्ल, 3 अप्रैल 1952, पृष्ठ 3)

और यह इन्शा अल्लाह कायम रहेगी। और खुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जो वादे किए हैं। जैसा कि आपने स्वयं फ़रमाया है। जब तक वे वादे पूर्ण नहीं हो जाते, तब तक ऐसा कोई निज़ाम जमाअत-ए-अहमदिया में नहीं आएगा जो ख़िलाफ़त को क्षति पहुँचाने वाला हो। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, ख़िलाफ़त के दर्जे को समझने वाले और पूर्ण रूप से वफ़ादार थे। इसीलिए यह प्रश्न ही नहीं उठता था कि वे कोई अलग राय रखते हों। बल्कि आप फ़रमाया करते थे कि यदि मेरी किसी विषय में कोई राय हो और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त उससे भिन्न निर्णय लें, तो मेरे मन में यह विचार भी कभी नहीं आता कि मेरी भी कोई अलग राय हो सकती है। यह थी पूर्ण वफ़ादारी।

इस दृष्टिकोण से भी हमें खुदा तआला के वचनों पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि ख़िलाफ़त का यह निज़ाम खुदा तआला की कृपा से वह व्यवस्था है जो खुदा तआला की इच्छा के अनुसार स्थापित हुआ है और उसी के अनुसार संचालित होता रहेगा। न कि उसमें कोई प्रकार की सांसारिक राजशाही प्रवेश करेगी।

ख़लीफ़ा-ए-वक़्त तो रात्रियों में उठकर अपनी नमाज़ों में जमाअत के व्यक्तियों के लिए दुआ करता है। क्या कोई राजा ऐसा करता है?

अतः यदि हम इस बात को स्मरण रखें और इसके अनुसार आचरण भी करें, तभी हम सफल हो सकते हैं। खुदा तआला ने वादा फ़रमाया है कि यह उन्हें प्राप्त होगा जो खुदा तआला और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करेंगे। इसलिए जब तक हमारे भीतर वे लोग रहेंगे जो अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों की पूरी तरह आज्ञापालन करते रहेंगे, वे भी भागीदार बनते रहेंगे और हम भी इस वचन से लाभान्वित होते रहेंगे। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो ऐसे लोग तो अलग हो जाएँगे। लेकिन खुदा तआला का वचन इन्शा अल्लाह कभी स्थगित नहीं होगा।

खुदा तआला ने फ़रमाया है:

"وَاِنۡ تُطِيۡعُوۡهُ تَهۡتَدُوۡا"

यदि तुम आज्ञा का पालन करोगे, तो मार्गदर्शन पाओगे और सदैव मार्गदर्शित रहोगे।

और फिर फ़रमाया है :

"وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡكُمۡ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ"

अर्थात खुदा तआला ने उन लोगों से वादा किया है जो तुममें से ईमान लाए और जिन्होंने सच्चे कर्म किए।

और ईमान और सच्चे कर्म का जो स्तर है, वह पहली आयत में स्पष्ट कर दिया गया है। पूर्ण आज्ञापालन का जुआ अपनी गर्दन पर रखो, तभी सच्चे मोमिन कहलाओगे। तभी अच्छे कर्म करने की प्रेरणा जागेगी और उसमें निरंतर बढ़ते जाने की भावना उत्पन्न होगी। जब यह स्तर प्राप्त हो जाएगा, तो फिर हम ख़िलाफ़त की नेमत से निरंतर लाभान्वित होते रहेंगे।

इसलिए अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त को जारी रखने और इससे लाभ उठाने के लिए हम लोगों को यह हिदायत दी है कि जो लोग इस ख़िलाफ़त से जुड़े रहेंगे, वे अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करें और उसके आदेशों पर अमल करें।

अब मुसलमानों को देख लो, इतिहास हमें बताता है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जो हदीस है, उसके अनुसार भी हम यही देखते हैं कि मुसलमानों में वास्तविक ख़िलाफ़त, ख़िलाफ़त-ए-राशिदा, तब तक क़ायम रही जब तक उन्होंने आज्ञापालन का जुआ अपनी गर्दनों पर डाले रखा। जब वे आज्ञापालन से बाहर निकल गए, तो ख़िलाफ़त से भी वंचित हो गए। इसलिए इस बात को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि जमाअत-ए-अहमदिया से जुड़कर यदि उससे लाभ प्राप्त करना है, तो ख़िलाफ़त से जुड़ना हर अहमदी का कर्तव्य है, और ख़िलाफ़त की पूर्ण आज्ञापालन करना भी हर अहमदी का फ़र्ज़ है, और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के आदेशों पर अमल करना तथा उनसे वफ़ादारी रखना भी हर अहमदी का अनिवार्य उत्तरदायित्व है।

तभी वह मार्गदर्शन प्राप्त करने वाला भी होगा और तभी वह इस व्यवस्था से लाभान्वित होता रहेगा, जैसा कि अल्लाह तआला ने एक सच्चे मोमिन और ख़िलाफ़त से जुड़ने वाले व्यक्ति के लिए आवश्यक ठहराया है। ख़िलाफ़त का यह जो निज़ाम है, यह ऐसा निज़ाम है जिसमें अल्लाह स्वयं दिलों को मोड़ता है। यही अल्लाह की ताईद है, और हम हमेशा प्रत्येक ख़िलाफ़त के दौर में इसे देख चुके हैं।

हज़रत ख़लीफ़ा तुल मसीह अव्वल, हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु जब ख़िलाफ़त के पद पर आसीन हुए तो अल्लाह तआला की विशेष ताईदें उनके साथ थीं और लोगों ने उनके हाथ पर बैअत की। हज़रत ख़लीफ़ा तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में भी हमने देखा कि फसाद और विरोधों के बावजूद अल्लाह तआला की विशेष सहायता आपके साथ थी और यह ताईदें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वचनों को पूर्ण करने वाली थीं, और फिर जमाअत-ए-अहमदिया एक हाथ पर एकत्र हो गई। जो लोग ख़िलाफ़त के निज़ाम के विरोधी थे या आगे चलकर ख़िलाफ़त को जारी रखने के विरोधी थे, वे अलग हो गए और उनका कोई मूल्य न रहा। फिर ख़िलाफ़त-ए-तालीस में भी हमने देखा कि किस प्रकार लोग एक हाथ पर जमा हुए। फिर ख़िलाफ़त-ए-राबे में हमने देखा कि किस प्रकार लोग एकजुट हुए और किसी प्रकार की बुराई उन्हें तोड़ न सकी। और अब ख़िलाफ़त-ए-ख़ामिसा में, जैसा कि मैं पहले कई बार बयान कर चुका हूँ, देखा कि किस प्रकार लोग एकजुट हुए। यह एक उदाहरण है। एक ऐसा उदाहरण जिसके समकक्ष कोई और मिसाल नहीं। दूर-दराज़ के देशों के लोग एकत्र हुए और उन्होंने ऐसी वफ़ादारी प्रदर्शित की जिसकी कोई दूसरी मिसाल नहीं मिलती।

अब आप दुनिया में देख लीजिए कि जमाअत-ए-अहमदिया ही वह जमाअत है जो एक अनुशासित प्रणाली में बुनी हुई है, और अल्लाह के विशेष अनुग्रहों से, जमाअत से जुड़ने और ख़िलाफ़त से जुड़े रहने के कारण, उन पर अल्लाह की अनेक कृपाएँ बरस रही हैं। यह सत्य है कि विरोधियों की ओर से जमाअत-ए-अहमदिया पर अत्यधिक अत्याचार किए जा रहे हैं, विशेषतः पाकिस्तान में और कुछ अन्य देशों में भी, लेकिन अल्लाह के फ़ज़्ल से सब अपने ईमान पर क़ायम हैं और फिर भी इस बात पर अडिग हैं कि ये तकलीफ़ें उन्हें उनके धर्म से नहीं डिगा सकतीं। और बदले में अल्लाह तआला जो इनामों की वर्षा उनकी पीढ़ियों पर कर रहा है, उसका कोई मुकाबला ही नहीं है।

पाकिस्तान में 1974 में जो फसाद जमाअत के ख़िलाफ़ हुआ, उसके बावजूद जमाअत आगे बढ़ती चली गई और सारी दुनिया में फैल गई। 1984 में जमाअत के ख़िलाफ़ जो कानून पारित हुए, उनसे जमाअत की तरक़्क़ी पर कोई

रोक नहीं पड़ी। ख़लीफ़ा-ए-वक़्त को भले ही पाकिस्तान रब्वा से, यानी केंद्र से, बाहर जाना पड़ा, लेकिन जमाअत की प्रगति नहीं रुकी। बल्कि बाहर जाकर ख़िलाफ़त पर अल्लाह तआला की विशेष कृपाओं की एक नई झलक देखने को मिली, और अल्लाह के इनामों की वर्षा के साथ एक नया युग प्रारंभ हुआ।

और फिर ख़िलाफ़त-ए-राबेया में हमने देखा कि किस तरह जमाअत ने प्रगति की और आज भी हम देख रहे हैं कि जमाअत उन्नति की ओर बढ़ रही है, जबकि विरोधियों ने अत्याचारों की सारी सीमाएँ पार कर दी हैं। विशेष रूप से 2010 के बाद, जब हमारे विरोधियों ने हमारी मस्जिदों पर व्यापक हमले करके कई अहमदियों को शहीद कर दिया, और उसके बाद भी समय-समय पर शहादतें होती रहीं। कभी अधिक, कभी कम। और ख़िलाफ़त-ए-ख़ामिसा के दौर में तो अनेक शहादतें हुई हैं। फिर भी हम देखते हैं कि अल्लाह तआला लोगों के ईमानों को डगमगाने नहीं दे रहा। यह अल्लाह का फ़ज़्ल है कि उनके ईमान और प्रबल होते जा रहे हैं। न केवल वे अपने ईमान पर स्थिर हैं, बल्कि मज़बूत होते जा रहे हैं। हाँ, कुछ लोग कमज़ोर ईमान वाले होते हैं, कुछ पीछे भी हट जाते होंगे, लेकिन अधिकांश अपने ईमानों पर अडिग हैं और अल्लाह तआला उन्हें इनामों से नवाज़ रहा है।

उन्हें अल्लाह तआला ने और कई माध्यमों से नवाज़ा है। उन्हें बाहर जाने का अवसर मिला और इस तरह उन्हें सांसारिक उन्नतियाँ भी प्राप्त हुईं। इसी प्रकार हम देखते हैं कि बाहर की दुनिया में अन्य देशों में भी जमाअत-ए-अहमदिया बड़ी तेजी से फैलती चली जा रही है। यह अल्लाह तआला का वह वचन है जो ख़िलाफ़त के साथ था, और जिसके परिणाम अब हमारे समक्ष प्रकट हो रहे हैं। आज हम 213–214 देशों में जमाअत-ए-अहमदिया का निज़ाम स्थापित कर चुके हैं, और अल्लाह के फ़ज़्ल से एक मुखलिस जमाअत क़ायम हो रही है।

दूर-दराज़ रहने वाले ऐसे लोग भी हैं जिन्हें देखकर आश्चर्य होता है कि उनका ख़िलाफ़त से कितना गहरा संबंध है। मैं पहले भी कई घटनाएँ बयान कर चुका हूँ कि अफ़्रीका के दूरस्थ गांवों में रहने वाले लोग किस प्रकार ख़िलाफ़त से जुड़े हुए हैं और नुक़सान झेलने के बावजूद अपने ईमान पर अडिग हैं।

अब बुरकीना फ़ासो में डोरी नामक स्थान पर जहाँ आठ-नौ अहमदियों ने शहादत पाई, वहाँ ईमान पर अडिग रहते हुए उन्होंने अपनी जानों की कुर्बानी दी। उनकी संताने और उनकी संतानें भी ईमान पर क़ायम हैं और वे कहते हैं कि।

हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर उसी प्रकार ईमान रखते हैं जैसे हमारे इन शहीदों ने ईमान रखा और अपनी जानें क़ुर्बान कीं, और हम भी क़ुर्बानी देने को तैयार हैं, और हम ख़िलाफ़त के लिए और ख़िलाफ़त के निज़ाम को क़ायम रखने के लिए हर बलिदान को तैयार हैं।

और ऐसे प्रेम से भरे संदेश वे मुझे भेजते हैं कि आश्चर्य होता है कि ये दूर-दराज़ के लोग, जिन्हें हम कभी-कभी अशिक्षित समझते हैं, उनके भीतर भी ऐसा ईमान का जोश है कि उनके शब्द, उनका उत्साह, उनका प्रेम और ख़िलाफ़त से अनुराग। ये सब कुछ अवर्णनीय हैं, अतुलनीय हैं।

तो यह अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है कि ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के साथ जो वादा अल्लाह ने किया था कि यह स्थायी होगी, उस स्थायी व्यवस्था को क़ायम रखने के लिए वह लोगों के दिलों को ईमान से भर रहा है और भरता जा रहा है। अफ़्रीका के एक देश में मैं गया। वहाँ एक व्यक्ति, जिसके हाथ भी पूरी तरह कार्य नहीं कर रहे थे, विकलांग था, उसने मुझसे सलाम किया और इतने ज़ोर से हाथ पकड़ा कि लगा मेरा हाथ किसी शिकंजे में आ गया हो, और ऐसा प्रेम प्रदर्शित किया कि आश्चर्य हुआ कि इसे कितनी मोहब्बत है। न पहले कभी जान-पहचान थी, न भेंट हुई थी, सिर्फ़ ख़िलाफ़त का प्रेम था। देखते ही लोग रोने लग जाते थे। कभी पहले मिले नहीं, कोई पहचान नहीं, लेकिन इस तरह गले लग कर रोते कि हैरानी होती थी कि किस तरह अल्लाह ने उनके दिलों में ख़िलाफ़त के लिए प्रेम पैदा कर दिया है। और वे यह संकल्प करते थे कि हम ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया को क़ायम रखने के लिए हर बलिदान को तैयार हैं। यह हमारा केवल संकल्प नहीं है, बल्कि हम इसे पूर्ण कर के दिखाएँगे।

असंख्य लोग हर वर्ष मुझे पत्र लिखते हैं और अनेक पत्रों में। छोटे बच्चों से लेकर स्त्रियों, युवाओं और वृद्धों तक। प्रेम की अभिव्यक्ति होती है, और ऐसे-ऐसे प्रेम के दृश्य होते हैं जिन्हें देखकर मन चकित रह जाता है कि किस प्रकार अल्लाह तआला ने उनके हृदयों में ख़िलाफ़त के लिए, जमाअत के लिए, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए प्रेम भर दिया है, और इस्लाम की उन्नति के लिए उनके हृदयों में कितना दर्द भर दिया है।

तो यही वह वस्तु है जिसे अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के माध्यम से स्थापित किया है। और इसे जारी रखने के लिए अल्लाह हमसे कहता है कि यदि तुम इस पर क़ायम रहोगे, यदि तुम नेकियाँ करते रहोगे, अपने आचरण को उत्तम बनाते रहोगे, तो फिर तुम इससे लाभ पाते रहोगे।

अल्लाह तआला ने इन्हीं आयतों में यह भी फ़रमाया है कि वे लोग जो ईमान में प्रगति करने वाले होते हैं वे कभी भी शिर्क नहीं करते।

इसलिए हमारे लिए भी यह अनिवार्य है कि हम सदैव हर प्रकार के शिर्क से बचे रहें। बीते दिनों में, जब मैंने यूके की शूरा में एक भाषण दिया था, तो उसमें भी मैंने यही बात कही थी और हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु के विभिन्न संदर्भों से यह बात स्पष्ट की थी कि यदि हमारे भीतर, किसी ओहदेदार के भीतर। और केवल ओहदेदार ही नहीं, हर अहमदी इसका संबोधित है। किसी भी व्यक्ति के भीतर अहंकार है, हमारे भीतर घमंड है, तो यह हमारे भीतर शिर्क की मिलावट है।

इसलिए यदि हमें ख़िलाफ़त के वास्तविक लाभों से लाभान्वित होना है और वास्तव में अल्लाह तआला की बरकतों के उत्तराधिकारी बनना है, तो हमें हर प्रकार के शिर्क से, अपनी अहंकार और घमंड से स्वयं को मुक्त करना होगा और उससे अपने आपको शुद्ध करना होगा। और तभी ऐसे ओहदेदार और कार्यकर्ता जमाअत के लिए लाभकारी और उपयोगी सिद्ध होंगे, जब उनका अहं समाप्त हो जाएगा, जब उनका घमंड मिट जाएगा, और वे केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिए कार्य करने वाले बनेंगे।

फिर अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया है कि ये वे लोग होते हैं जो नमाज़ को क़ायम करने वाले होते हैं, ज़कात अदा करने वाले होते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की पूरी आज्ञा का पालन करने वाले होते हैं। और ऐसे ही लोगों पर अल्लाह की रहमत उतरती है।

इसलिए अब जब अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा यह इनाम, ख़िलाफ़त का इनाम, शुरू फ़रमाया है, तो इससे लाभ उठाने के लिए हर अहमदी को अल्लाह के इस आदेश को स्मरण में रखना चाहिए कि उसका वादा ख़िलाफ़त की बरकतों को जारी रखने या उनसे लाभ उठाने का उन्हीं लोगों से है जो पूर्ण आज्ञापालन करने वाले हों।

अल्लाह की इबादत को सदैव अपनी नज़रों के सामने रखो, क्योंकि अल्लाह की पूर्ण आज्ञा का पालन वही लोग करते हैं जो सदा अल्लाह को याद करने वाले और उसकी इबादत करने वाले होते हैं।

और इबादत के लिए जैसा कि हम जानते हैं, अल्लाह तआला ने बार-बार हमें इस बात का आदेश दिया है कि नमाज़ों को क़ायम करो। अतः नमाज़ों की स्थापना अत्यंत महत्त्वपूर्ण विषय है। इसके लिए हर अहमदी को, जो स्वयं को ख़िलाफ़त से जुड़ा हुआ समझता है या जुड़ना चाहता है और उससे लाभ उठाना चाहता है, यह बात सदैव याद रखनी होगी कि हमें नमाज़ों की स्थापना की ओर भरपूर ध्यान देना है।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु ने नमाज़ की स्थापना की व्याख्या करते हुए एक स्थान पर अत्यंत सुंदर रूप में यह फ़रमाया कि "सलात का सर्वोत्तम भाग जुमा है, जिसमें इमाम ख़ुत्बा देता है और नसीहत करता है, और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त समय और परिस्थितियों को देखते हुए, दुनिया की विभिन्न क़ौमों की समय-समय पर उत्पन्न होने वाली आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर नसीहत करता है, जिससे क़ौमी एकता और संगठितता उत्पन्न होती है।"

(मआख़ूज़: तफ़्सीर-ए-कबीर, जिल्द 8, सफ़ा 575, एडिशन 2022)

ख़लीफ़ा-ए-वक़्त सबका क़िबला एक ही दिशा में कर देता है। आज हम इसकी वास्तविक तस्वीर अपनी आँखों से देख रहे हैं। अब तो MTA के ज़रिए

अल्लाह तआला ने ऐसा व्यवस्था क़ायम कर दी है कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त का ख़ुत्बा दुनिया के हर देश में, हर क्षेत्र, हर शहर, हर गांव में सुना और देखा जाता है।

और यह केवल यही नहीं कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त जो बातें कर रहे हैं वे केवल सामने बैठे लोगों के लिए होती हैं, बल्कि मुझे बहुत से पत्र अफ़्रीका, तुर्की और रूस के देशों से मिलते हैं जिनमें लोग यह लिखते हैं कि "आप जो बातें कर रहे हैं वे हमारे हालात के अनुसार प्रतीत होती हैं, और उन्हें सुनकर हमारे भीतर आत्मसुधार की भावना जागृत होती है, और यह एहसास होता है कि वास्तव में ख़िलाफ़त की व्यवस्था एक ऐसी व्यवस्था है जिसने हमें एकता के सूत्र में बाँध दिया है।"

अतः यह विचार कि जो बातें की जा रही हैं वह केवल पाकिस्तानी सोच रखने वालों के लिए हैं या केवल यूरोप के कुछ लोगों के लिए हैं, यह सही नहीं है। बल्कि मुझे जो पत्र मिलते हैं उनसे यह ज्ञात होता है कि दुनिया के हर कोने में, हर देश में कुछ न कुछ बातें ऐसी ज़रूर होती हैं जो सांझा अनुभव से जुड़ी होती हैं और जिनके कारण लोगों को आत्मसुधार का अवसर मिल जाता है। आजकल मैं इस्लामी इतिहास पर बातें कर रहा हूँ, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत के बारे में बात कर रहा हूँ, तो उसमें भी कई बातें ऐसी आती हैं जो हमारे लिए नसीहत का कारण बनती हैं, और लोग उनसे अत्यधिक लाभ उठा रहे हैं।

साथ ही उन्हें इस्लामी इतिहास की जानकारी भी हो रही है, इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं का भी उन्हें ज्ञान हो रहा है, और इसी क्रम में उन्हें सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की जीवनी का भी ज्ञान हो रहा है। और इन्हीं बातों के ज़रिए उन्हें हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विभिन्न अवसरों पर प्रकट होने वाली सुन्दर आदर्शों (उसवह ए हसनह) की जानकारी भी मिल रही है। और इनमें भी कई बातें ऐसी होती हैं जो उनकी व्यक्तिगत आत्मसुधार के लिए लाभदायक सिद्ध हो रही हैं, और वे इनसे लाभ उठा रहे हैं और इसका स्पष्ट रूप से उल्लेख भी करते हैं।

अतः यही ख़िलाफ़त का वह साधन है जिसे अल्लाह तआला ने हमारे बीच स्थापित फ़रमाया है, जिसके द्वारा जमाअत-ए-अहमदिया एक एकता का रूप धारण कर चुकी है और दुनिया के 215 देशों में रहने वाला प्रत्येक अहमदी इस व्यवस्था से जुड़ा हुआ है और आत्मसुधार की कोशिश कर रहा है।

अल्लाह तआला ने ज़कात की अदायगी का आदेश भी दिया है। यह भी माल के शुद्धिकरण (तज़किया-ए-अम्वाल) के लिए बहुत आवश्यक है। इसके लिए आवश्यक है कि अपने मालों को शुद्ध करो। इसमें बाक़ी तमाम माली क़ुर्बानियाँ भी सम्मिलित हैं।

आज हम देखते हैं कि केवल जमाअत-ए-अहमदिया के माध्यम से यह माली व्यवस्था क़ायम है, और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की आज्ञापालन में दुनिया भर में चंदा देने के माध्यम से जमाअत के फ़र्द और जमाअतों की आवश्यकताएँ पूरी की जा रही हैं।

किसी एक देश में यदि कोई कमी होती है तो दूसरे देश के माध्यम से वह कमी पूरी की जाती है। अफ़्रीका में लोग भले ही बड़ी क़ुर्बानियाँ देते हैं, लेकिन उनके हालात ऐसे हैं कि उनके ख़र्चे उनकी आमदनियों से कहीं ज़्यादा होते हैं। इसलिए वहाँ बाहरी देशों से धन भेजना पड़ता है, और उसी से वहाँ के स्कूलों, अस्पतालों, मिशन हाउसों और मस्जिदों का निज़ाम चलता है, और वहाँ के लोग इसके लिए अत्यंत आभारी हैं कि किस तरह अल्लाह तआला ने हमें एक व्यवस्था में रखकर उससे लाभ उठाने की तौफ़ीक़ बख़्शी।

विरोधी लोग उन देशों में पहुँचते हैं, और कुछ स्थानों पर तो वे यहाँ तक कहते हैं कि "तुम क़ादियानियत छोड़ दो, मिर्ज़ाइयत या अहमदियत छोड़ दो, ये अहमदी लोग इस्लाम की शिक्षाओं के अनुसार आचरण नहीं करते।" लेकिन वहाँ के लोग, जो नव-बैअत करने वाले होते हैं, उन गैर-अहमदियों को उत्तर में यही कहते हैं: "अब तक तो तुमने हमें कुछ सिखाया ही नहीं। आज जमाअत-ए-अहमदिया आई है और उन्होंने हमारे गांवों में, हमारे कस्बों में, हमारे शहरों में मस्जिदें बनाई हैं। उन्होंने हमारी शिक्षा की ओर ध्यान दिया है। हमें स्कूलों की सुविधाएँ दी हैं, अस्पताल बनाए हैं और हमें धर्म भी सिखा रहे हैं। हमें क़ुरआन करीम पढ़ा रहे हैं, उसका अनुवाद भी पढ़ा रहे हैं। तुमने तो अब तक कुछ किया ही नहीं, और आज तुम सिर्फ़ इसलिए इनके पीछे पड़ गए हो कि ये मुसलमान नहीं हैं। अगर ये मुसलमान नहीं हैं, तो फिर दुनिया में कोई भी मुसलमान नहीं।"

यही उत्तर होता है उन नौमुबाईन करने वालों का।

अतः यह भी ख़िलाफ़त की व्यवस्था है जिसके माध्यम से अल्लाह ने लोगों के दिलों में माली क़ुर्बानी की भावना उत्पन्न की और चंदा जात और ज़कात के ज़रिए, फिर ख़िलाफ़त के प्रणाली द्वारा उस धन को सही दिशा में, वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति में खर्च किया जा रहा है। इससे ग़रीबों की सहायता हो रही है, ज़रूरतमंदों की ज़रूरतें पूरी हो रही हैं और इस्लाम के प्रचार का कार्य भी हो रहा है।

ख़ैर, जैसा कि पहले भी कहा गया, कुछ परिस्थितियाँ ऐसी हैं जिनके कारण कुछ स्थानों पर कठिनाइयाँ उत्पन्न हो रही हैं। बांग्लादेश, कुछ अरब देश, अफ़्रीका के देश, पाकिस्तान और कुछ अन्य स्थान जैसे फिलिस्तीन भी, जहाँ आजकल थोड़े बहुत अहमदी मौजूद हैं और वे भारी संकट में हैं।

सामान्य रूप से तो वहाँ की पूरी फ़िलिस्तीनी क़ौम ही अत्यधिक संकट में है और उन पर क्रूर, अमानवीय अत्याचार किए जा रहे हैं। अल्लाह तआला उन्हें भी इस ज़ुल्म से राहत दे, जो फ़िलिस्तीनियों पर ढाया जा रहा है। इन ज़ालिमों की मंशा तो यही है कि उनका पूरी तरह से नस्लनाश कर दिया जाए, और वे यही कर भी रहे हैं। अल्लाह ही रहम फ़रमाए।

लेकिन इसके बावजूद, जो अहमदी हैं, वे इन तमाम दुखों को देखकर भी इस बात पर अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं कि हमारे भीतर ख़िलाफ़त का निज़ाम क़ायम है, जो हमें तसल्ली भी देता है और हमारी ज़रूरतों को भी पूरा करने की कोशिश करता है।

दुनिया में हम देखते हैं, और जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था, कि अनेक दुर्घटनाएँ प्रकट होंगी। कुछ तो प्राकृतिक आपदाओं की शक्ल में, और कुछ मनुष्यों की अपनी ग़लतियों और अहंकार की वजह से, जिनके कारण दुनिया फ़साद और संघर्ष में डूबी हुई है, जिसकी वजह से युद्ध और दंगे पैदा हो रहे हैं।

यदि इन लोगों ने अब भी अल्लाह तआला की ओर ध्यान न दिया, तो फिर एक विनाशकारी आपदा आने वाली है, जिसकी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कई बार भविष्यवाणी की है।

इसलिए, जो लोग ख़िलाफ़त के निज़ाम से जुड़े हुए हैं, उनका यह कर्तव्य है कि वे इस ओर ध्यान दें कि हमें दुनिया को भी इस विनाश से बचाना है। और जब हम यह संकल्प करेंगे कि हमें दुनिया को विनाश से बचाना है, तो फिर इसके लिए प्रयास भी करने होंगे। और प्रयास यह है कि हम पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ दुनिया को अल्लाह की ओर ले जाने की कोशिश करें, और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अपने सामर्थ्य, साधन और क्षमताओं को पूरी तरह से काम में लाएँ, और इसके लिए अपने प्राण, धन और समय को बलिदान करने के लिए हर समय तत्पर रहें।

और इसी प्रकार हर अहमदी को स्वयं भी अपना संबंध ख़ुदा तआला से इस प्रकार बढ़ाना चाहिए कि अल्लाह तआला की विशेष अनुकंपाएँ उस पर उतरें, और वह इन अनुकंपाओं के कारण अल्लाह तआला का सामीप्य प्राप्त करने वाला बने। और जब वह सामीप्य प्राप्त करने वाला बन जाएगा, तो जहाँ वह संसार को विनाश से बचाने वाला होगा, वहीं वह अपनी संतान को भी बचाने वाला होगा और स्वयं को भी आपदाओं से बचाने वाला होगा। क्योंकि ये आपदाएँ और विनाश इस सीमा तक गहराते जा रहे हैं कि आगामी समय में वे किस रूप में प्रकट होंगे, इसका अनुमान भी मनुष्य नहीं लगा सकता।

अतः यह सदैव स्मरण में रहे कि केवल ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से जुड़ने में ही अब संसार की रक्षा का माध्यम है। और ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया उस व्यवस्था की निरंतरता है, उस प्रतिज्ञा की निरंतरता है जो अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से की थी,

और जिसकी भविष्यवाणी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम

ने की थी, और जो मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से आरंभ होनी थी। अतःयह ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया की श्रृंखला वह माध्यम है जो अल्लाह तआला तक पहुँचाती है।

और यह उसकी व्यवस्था को स्थापित करने के लिए एक कड़ी है। इसके लिए प्रत्येक अहमदी को प्रयासरत रहना चाहिए। और जब हम ऐसा करेंगे, तो अल्लाह तआला हमें अपने विशेष वरदानों का उत्तराधिकारी बनाएगा, और वे वरदान ऐसे होंगे कि वे संसार में किसी और पर इस प्रकार उतर ही नहीं सकते।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक उद्धरण मैं अंत में प्रस्तुत करता हूँ। आप फ़रमाते हैं:

"यह मत समझो कि ख़ुदा तआला तुम्हें नष्ट कर देगा। तुम ख़ुदा के हाथ का वह बीज हो जो धरती में बोया गया है। ख़ुदा फ़रमाता है कि यह बीज बढ़ेगा और फूलेगा और हर दिशा में इसकी शाखाएँ फैलेंगी और एक विशाल वृक्ष बन जाएगा। अतः धन्य है वह जो ख़ुदा की बात पर ईमान लाता है। धन्य है वह जो ख़ुदा की बात पर ईमान लाता है, और जो बीच में आने वाले परीक्षणों से न डरे क्योंकि परीक्षाओं का आना भी आवश्यक है ताकि ख़ुदा तुम्हारी परीक्षा ले कि कौन अपने बैअत के दावे में सच्चा है और कौन झूठा। वह जो किसी परीक्षा से लड़खड़ाएगा वह ख़ुदा का कुछ भी नुक़सान नहीं करेगा, और उसकी अभिशप्ति उसे जहन्नम तक पहुँचा देगी। यदि वह उत्पन्न न हुआ होता तो उसके लिए अच्छा होता। लेकिन वे सभी लोग जो अंत तक धैर्य करते रहेंगे, जिन पर विपत्तियों के झंझावात आएँगे, और घटनाओं की आँधियाँ चलेंगी, और कौमें उन पर हँसी उड़ाएँगी और उपहास करेंगी, और संसार उनसे अत्यंत घृणा के साथ व्यवहार करेगा। वे अंत में विजय प्राप्त करेंगे और उन पर बरकतों के द्वार खोल दिए जाएँगे।

ख़ुदा ने मुझे संबोधित करके कहा कि मैं अपनी जमाअत को सूचना दूँ कि जो लोग ईमान लाए। ऐसा ईमान जिसमें संसार की मिलावट नहीं, और ऐसा ईमान जो निफ़ाक़ या डरपोकपन से दूषित नहीं, और ऐसा ईमान जो आज्ञापालन के किसी भी स्तर से रहित नहीं। वे ही लोग ख़ुदा के प्रिय लोग हैं, और ख़ुदा फ़रमाता है कि वे ही हैं जिनका क़दम सत्यता का क़दम है।"

अतः यह अल्लाह तआला का विशेष अनुग्रह है, जैसा कि मैंने कहा, कि संसार के हर कोने में, हर देश में अल्लाह तआला ने जमाअत-ए-अहमदिया को, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को, और ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया को ऐसे लोग प्रदान कर दिए हैं जो अपनी क़ुर्बानियों के स्तर में निरंतर बढ़ते जा रहे हैं, और हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए गए अल्लाह तआला के वादों को पूर्ण होता हुआ देख रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि अल्लाह तआला ने मुझसे यह वादा किया है कि यह संसार समाप्त नहीं होगा जब तक कि मेरे सारे वादे पूर्ण न कर दिए जाएँ। कुछ मेरी ज़िन्दगी में और कुछ मेरे पश्चात्। और हम देखते हैं कि अल्लाह तआला आज तक उन वादों को पूरा करता चला आ रहा है, और जो लोग ख़िलाफ़त की व्यवस्था से जुड़े हुए हैं वे इसका साक्षात् अनुभव कर रहे हैं, और इंशाअल्लाह आगे भी करते रहेंगे।

अतः हम में से प्रत्येक का कार्य है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो अल्लाह तआला से सूचनाएँ प्राप्त कर हमें शुभ-संदेश दिए हैं, उनसे लाभ प्राप्त करने के लिए, अल्लाह के वरदानों के वादे से लाभ उठाने के लिए हम अल्लाह की महानता को अपने हृदयों में, संसार के हृदयों में, और अपनी संतान के हृदयों में भी स्थापित करने वाले बनें, और व्यावहारिक रूप से अल्लाह तआला की एकता का प्रदर्शन करने वाले बनें। हम मानवता के प्रति सच्ची सहानुभूति रखने वाले बनें, अपने दिलों को द्वेष और घृणा से शुद्ध करने वाले बनें, प्रत्येक भलाई के मार्ग पर चलने वाले बनें, अपने ईमान की रक्षा करने वाले बनें, पूर्ण आज्ञापालन का आदर्श प्रस्तुत करने वाले बनें, और ईमान में निरंतर प्रगति करते रहने वाले बनें, ताकि अल्लाह तआला के निकट हमारे क़दम सत्य के क़दम माने जाएँ, और हम उसके वादों से लाभ प्राप्त करने वाले बनें।

अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ प्रदान करे कि हम में से प्रत्येक व्यक्ति ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया को क़ायम रखने के लिए हर प्रकार की क़ुर्बानी देने के लिए सदैव तैयार रहे। और हम समय-समय पर जो संकल्प करते हैं। जो ज़ैली संस्थाओं में भी होते हैं। उनके सदस्य भी जो संकल्प करते हैं, वे उन्हें पूरा करने वाले बनें। और अल्लाह तआला हमारे जीवन में ऐसा समय लाए जब हम देखें कि संसार में अल्लाह तआला की एकता का ध्वज हर ओर लहरा रहा है, और लोग हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ग़ुलामी में दल-दल आ रहे हैं और अल्लाह तआला के पूर्ण आज्ञापालकों में सम्मिलित होने का प्रयास कर रहे हैं। और जब यह होगा तो वही दिन हमारे लिए वास्तविक प्रसन्नता का दिन होगा। वही दिन हमारे लिए ऐसा शुभ और पवित्र दिन होगा जब हम कहेंगे कि ख़िलाफ़त के जिस वादे को अल्लाह तआला ने किया था, उसकी बरकतों से आज हम लाभान्वित हो रहे हैं। और यही वे दिन होंगे जो संसार को विनाश से बचाने वाले दिन होंगे।

अल्लाह तआला हमें आत्मसुधार की भी तौफ़ीक़ प्रदान करे, और अल्लाह तआला का सन्देश संसार तक पहुँचाने की भी तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन।

नमाज़ के पश्चात् मैं दो जनाज़े भी पढ़ाऊँगा।

पहला उल्लेख मुकर्रम कर्नल डॉक्टर पीर मुहम्मद मनीर साहिब का है। आप फ़ज़्ल उमर अस्पताल रब्वा के एडमिनिस्ट्रेटर भी रहे हैं। कुछ दिन पूर्व 85 वर्ष की आयु में आपका निधन हो गया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के अनुग्रह से आप मोसी थे। 1963 में आपने स्वयं बैअत कर के जमाअत में प्रवेश किया। इसके पश्चात् 1967 में आपने वसीयत की और वसीयत के प्रणाली में सम्मिलित हुए। 1991 में आपके आचरण को देखकर आपके माता-पिता ने भी बैअत की सौभाग्य प्राप्त किया।

कर्नल पीर मुहम्मद मनीर साहिब ने सेवा-निवृत्ति के पश्चात् ज़िला मुल्तान के नायब अमीर के रूप में भी सेवा की तौफ़ीक़ प्राप्त की। 2004 में रब्वा आकर वक्फ़ बाद अज़ रिटायरमेंट किया और फ़ज़्ल उमर अस्पताल में नियुक्त हुए। सामान्य चिकित्सक के रूप में सेवाएँ दीं। कुछ समय बाद आपको फ़ज़्ल उमर अस्पताल का एडमिनिस्ट्रेटर नियुक्त किया गया। इस पद पर भी आपने बारह वर्षों तक अत्यंत निष्ठा, परिश्रम और सहृदयता से सेवा की। 2017 में स्वास्थ्य दुर्बलता के कारण इस पद से मुक्त किया गया, लेकिन एक डॉक्टर के रूप में आपने सेवा जारी रखी और ENT विभाग में काम किया। जमाअत के लिए वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी के रूप में आपकी सेवाओं की अवधि उन्नीस वर्ष रही।

आपकी पत्नी अम्मतुल मालिक साहिबा, जो हज़रत डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब की नातिन हैं, कहती हैं कि आप अत्यंत शफ़ीक़ पिता, स्नेही पति और पूरे परिवार से संबंध निभाने वाले थे। जमाअत और ख़िलाफ़त से अत्यंत गहरा संबंध था। अपने वक्फ़ को अत्यंत ईमानदारी से पूरा करने का प्रयास करते। कहती हैं कि हमारा आपस में साठ वर्षों का साथ था। अत्यंत विनम्र स्वभाव वाले और सभी का विशेष ध्यान रखने वाले थे। मेरे माता-पिता, मेरे भाई-बहनों और अपने माता-पिता की सेवा का बराबर ख़याल रखते। मानवता को उन्होंने सब चीज़ों से ऊपर रखा था। ड्यूटी से अक्सर देर से घर आते थे। जब कभी पूछा जाता तो कहते कि "लोगों का काम फाइलों से नहीं, बल्कि इंसानों से है। मैं इंसानों के साथ डील करता हूँ, उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखना मेरा फ़र्ज़ है।"

एक दिन बहुत देर से घर आए, पूछा कि देर क्यों हुई, तो बोले। किसी अस्पताल का एक सफाई कर्मचारी था, हमारे अस्पताल का भी नहीं था, उसकी सर्जरी थी और उसकी देखरेख करने वाला कोई नहीं था, तो मैं उसके पास बैठा रहा ताकि उसकी देखभाल कर सकूँ। तहज्जुदगुज़ार, रोज़ा-नमाज़ और नवाफ़िल के पाबंद थे। हर बृहस्पतिवार को रोज़ा रखने वाले थे। और जैसा कि पहले भी कहा गया, उनके आचरण को देखकर ही उनके माता-पिता ने 1991 में बैअत की।

उनकी माता जी कहा करती थीं कि "हम यह समझते थे कि अहमदी। नऊज़ुबिल्लाह। हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को नहीं मानते, केवल मिर्ज़ा साहिब को ही मानते हैं। यह बात मुझे पसंद नहीं थी। लेकिन जब मैंने देखा कि मेरा बेटा तहज्जुदगुज़ार भी है और नमाज़ों का पाबंद भी है, तो मैंने सोचा कि अहमदी ग़लत नहीं हो सकते।" इस प्रकार उनके आचरण ने ही उनके

माता-पिता को जमाअत में लाने का कारण बना। क्योंकि आपने स्वयं शोध कर के बैअत की थी, इसलिए आप अत्यंत कर्मशील अहमदी थे। ख़िलाफ़त से प्रेम और श्रद्धा का गहरा संबंध था। सदा स्वयं को ख़िलाफ़त से जोड़कर रखा और सदैव अपने बच्चों को भी यह ताकीद करते रहते कि किसी भी कठिन समय में ख़लीफ़ा-ए-वक़्त को लिखो।

सेवा के लिए उन्हें कभी किसी पद की इच्छा नहीं रही। बल्कि मुझे यह भी लिखा था कि जहाँ भी नियुक्त करें, जिस सेवा पर भी रखें, मैं तैयार हूँ। आपके उत्तराधिकारियों में पत्नी और तीन पुत्र शामिल हैं, पोते-पोतियाँ भी शामिल हैं।

अल्लाह तआला आप पर मग़फ़िरत और रहमत का व्यवहार फ़रमाए।

दूसरा उल्लेख श्रीमती सलीमा ज़ाहिद साहिबा का है,

जो समीउल्लाह ज़ाहिद साहिब मुरब्बी-ए-सिलसिला (हाल: कनाडा) की पत्नी थीं। कुछ दिनों पूर्व उनका निधन हो गया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

मरहूमा मोसीया थीं पिछले लोगों में उनके शौहर के अलावा एक बेटी और तीन बेटे शामिल हैं। उनके एक बेटे अता अल-मोमिन ज़ाहिद साहिब मुरब्बी-ए-सिलसिला हैं और जामिआ अहमदिया यूके में शिक्षक हैं।

मोमिन ज़ाहिद साहिब के पिता ने लिखा है कि उनकी माँ बिला किसी अतिशयोक्ति के साठ-सत्तर बच्चों को क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाया करती थीं, और उनके निधन के पश्चात् जिनका अब उल्लेख हो रहा है। मरहूमा ने यह कार्य जारी रखा और लगातार क़ुरआन करीम पढ़ाती रहीं। बल्कि बहुत से अहल-ए-हदीस और अहल-ए-सुन्नत लोग खुले रूप में यह स्वीकार किया करते थे कि हमारे बच्चों को क़ुरआन करीम इन्हीं ने पढ़ाया है

लिखते हैं कि वह सौभाग्यशाली, सरल स्वभाव वाली, वफ़ादार और सेवा-भावना से परिपूर्ण महिला थीं। सदा दूसरों की सेवा में लगी रहतीं। ज़रूरतमंदों को अपनी आवश्यकता पर प्राथमिकता देतीं।

उनके बेटे अता अल-मोमिन ज़ाहिद कहते हैं कि तंगी के हालात में भी वह अपने ऊपर खर्च करने के बजाय ज़रूरतमंदों की मदद करना अधिक पसंद करती थीं।

अल्लाह तआला उन पर मग़फ़िरत और रहमत का व्यवहार फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

मारकर बलपूर्वक अपहरण करके लाया गया और फिर बेचा गया। और कुछ लोग इस वाक्य के ये अर्थ लेते हैं कि जो स्त्रियाँ जिहाद में हाथ लगें, उन्हें बिना विवाह के घरों में रखना वैध है। लेकिन ये सभी अर्थ ग़लत हैं।

क़ुरआन मजीद और हदीसों में सेवकों और ग़ुलामों का अलग-अलग ज़िक्र है, इस कारण से सेवक इसमें सम्मिलित नहीं हैं। और ग़ुलामों के विषय में क़ुरआन मजीद साफ़ तौर पर कहता है:

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُثْخِنَ فِي الْأَرْضِ

अर्थात: किसी भी नबी के लिए यह उचित नहीं कि वह किसी शांतिपूर्ण जाति से युद्धबंदी (पुरुष या स्त्री) को बलपूर्वक पकड़ लाए जब तक कि उसके और उसके शत्रुओं के बीच रक्तपात वाली जंग न हो जाए। अर्थ यह है कि बिना किसी युद्ध के, शांति में रहने वाली किसी भी जाति से बन्दी बनाना उचित नहीं जैसा कि सदियों तक हिजाज़ के लोग हब्शा से ग़ुलाम लाते रहे, या जैसे कि पूर्ववर्ती सदियों में इराक़ के लोग ईरान से, रोम से, यूनान से या इटली के द्वीपों से ग़ुलाम पकड़ कर लाते थे। इस प्रकार की ग़ुलामी इस्लाम में वैध नहीं है।

केवल युद्धबंदी बनाना ही वैध है और वह भी उसी समय जब दुश्मनों से बाक़ायदा युद्ध हो जाए। और उस स्थिति में भी यह आदेश है कि युद्धबंदी को फ़िदिया लेकर रिहा किया जाए। और यदि उसके पास फ़िदिया न हो या उसकी जाति फ़िदिया देने को तैयार न हो, तो फिर इस्लामी सरकार को उसे एहसान के तौर पर मुक्त करना चाहिए। (सूरह मुहम्मद, रुकू : 1)

और यदि ऐसा करना कठिन हो तो ज़कात के धन से उसका फ़िदिया देकर उसे रिहा कर देना चाहिए।

(सूरह तौबा, रुकू 8)

और यदि इसमें भी कठिनाई हो तो बन्दी को "मुकातबत" (मालिक से समझौते के आधार पर स्वतंत्रता) का अधिकार दिया जाए।

(सूरह नूर, रुकू 4)

मुकातबत का अर्थ यह होता है कि युद्धबंदी अपने मालिक से कहता है कि मुझे स्वतंत्र कर दो, मैं परिश्रम करके अपनी कमाई से अपना फ़िदिया चुका दूँगा। और इस अवधि में वह अपने व्यक्तिगत व्यापार आदि में स्वतंत्र समझा जाता है, बस उसे इस्लामी राज्य के भीतर रहने का बंधन होता है।

अब यह बात स्पष्ट है कि यदि कोई स्त्री उपर्युक्त सभी तरीक़ों के होते हुए भी स्वयं को मुक्त नहीं कराना चाहेगी, तो वह स्त्री अवश्य ही वह होगी जो अपने देश में लौटना अपने लिए ख़तरनाक समझती होगी और मुसलमान पुरुष के पास रहने में जो खतरे होते हैं, उनके होते हुए भी वह बाहर निकलना पसंद नहीं करती होगी। ऐसी स्थिति में जब तक कोई मुसलमान पुरुष उससे विवाह न कर ले, तब तक कोई उपाय नहीं बचता। क्योंकि यदि वह न मुक्त होगी और न ही उससे विवाह किया जाएगा तो वह घर और क्षेत्र में अनैतिकता का कारण बनेगी और इस्लाम इसकी अनुमति नहीं देता।

इसलिए स्वतंत्र स्त्रियों और युद्धबंदी स्त्रियों में यही अंतर है कि स्वतंत्र स्त्री को अपनी इच्छा से विवाह करना वैध होता है, और जो स्त्री युद्धबंदी हो, वह या तो उन तरीक़ों से स्वयं को मुक्त कर लेती है जिन्हें इस्लाम ने उसके लिए खोला है, या फिर उस घर का कोई पुरुष उससे विवाह कर लेता है ताकि अनैतिकता का प्रसार न हो। और यदि उससे बच्चा उत्पन्न हो जाए, तो वह स्वतः स्वतंत्र हो जाती है।

इसलिए 'दाहिने हाथ की मिल्कियत' के शब्दों से कोई व्यक्ति धोखा न खाए। इन शब्दों का अर्थ ग़ुलामी नहीं है, क्योंकि ग़ुलामी इस्लाम में वैध नहीं है। क़ुरआन मजीद साफ़ शब्दों में कहता है कि जब तक किसी जाति के साथ भयंकर युद्ध न हो, तब तक उसमें से बन्दी बनाना वैध नहीं है। और फिर उन्हें भी अलग-अलग तरीक़ों से स्वतंत्र करने का आदेश है। जो अधिकांशतः इस्लामी सरकार, काफ़िर सरकार, बन्दी के रिश्तेदारों या स्वयं बन्दी के हाथ में होता है।

और यदि किसी बन्दी स्त्री की रिहाई के लिए न इस्लामी सरकार प्रयास करे (जो कि तटस्थ होती है), न काफ़िर सरकार प्रयास करे (जो कि उस बन्दी की पक्षधर होती है), न उसके रिश्तेदार प्रयास करें (जिन्हें सबसे अधिक दर्द होना चाहिए), और न ही वह स्त्री स्वयं प्रयास करे (जिसे अपनी इज़्ज़त की सबसे अधिक परवाह होनी चाहिए)। और फिर कोई मुसलमान उस स्त्री से विवाह कर ले, तो इस्लाम ने उसके लिए यह रास्ता खुला रखा है कि जैसे ही संतान उत्पन्न हो, वह स्वतः स्वतंत्र हो जाए।

अब बताइए कि वह स्त्री स्वतंत्र हुई या बंदी? पहले तो उसे बंदी बनाना कई प्रकार से ग़ैर वैध घोषित कर दिया गया, फिर उसकी स्वतंत्रता के लिए विवाह से पहले कई रास्ते खोल दिए गए, फिर विवाह के बाद संतान होने पर उसे स्वतः स्वतंत्र घोषित कर दिया गया। और हमेशा के लिए यह गारंटी दे दी गई कि उसे किसी भी स्थिति में बेचा नहीं जा सकता।

(मुअल्लिफ़: इमाम इब्न हज़्म, अल-मुहल्ला खण्ड 9, पृष्ठ 217)

अब बताइए, क्या संसार में किसी स्वतंत्र स्त्री को इससे अधिक अधिकार प्राप्त होते हैं?

(तफ़सीर-ए-कबीर, खण्ड 6, पृष्ठ 129 से 131, मुद्रित: क़ादियान 2010)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा
सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

मस्जिद 'बैतुस-समद' के उद्घाटन समारोह के अवसर पर हज़ूर-ए- अनवर अय्यदाहुल्लाह तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ के भाषण के पश्चात् मेहमानों की प्रतिक्रियाएँ

एक छात्रा ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा : हज़ूर-ए-अनवर के भाषण ने हमें एक नवीन ऊर्जा प्रदान की है। यहाँ आकर मुझे गर्व की अनुभूति हो रही है। हज़ूर-ए-अनवर ने कहा कि हम सभी इंसान हैं और वे यह बताना चाहते थे कि जब हम सभी एक जैसे मनुष्य हैं तो फिर हमारे बीच किसी प्रकार की नफ़रत के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता

सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट जॉन रॉबिन स्मिथ (John Robin Smith) ने कार्यक्रम के बाद अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा:

हज़ूर-ए-अनवर से मिलकर अत्यंत अच्छा लगा। डिनर के समय उनके निकट बैठना एक अत्यंत सम्मान की बात थी

हज़ूर-ए-अनवर ने जो शिक्षाएँ दी हैं, मैं समझता हूँ कि वे बातें समाज में शांति की स्थापना और उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगी

मैं 2015 से इस जमाअत को देख रहा हूँ और यह निरंतर प्रेम, सौहार्द और शांति का प्रचार कर रही है। आज पहली बार मैंने आपके इमाम से भी वही बातें सुनीं और मुझे यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि वास्तविक संदेश का स्रोत क्या है। आपके इमाम के महान व्यक्तित्व से यह अच्छाइयाँ निकलती हैं

20 अक्तूबर 2018, शनिवार
(तीसरा और अंतिम भाग)

मस्जिद 'बैतुस-समद' के उद्घाटन समारोह के अवसर पर हज़ूर-ए- अनवर अय्यदाहुल्लाह तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ के भाषण के पश्चात् मेहमानों की प्रतिक्रियाएँ (गत से जुड़ा हुआ)

एक महिला ने कहा : मैं हर रविवार को चर्च में विश्व शांति के लिए प्रार्थना करती हूँ। हज़ूर-ए-अनवर ने कहा कि हमें एक-दूसरे के समीप आना चाहिए, हमें एक-दूसरे को समझना चाहिए, न कि एक-दूसरे के धर्म, विश्वास और जातियों से भयभीत होना चाहिए। वास्तव में हमें इसी प्रकार होने की आवश्यकता है। मैं इसी कारण यहाँ आई हूँ। मेरी यह इच्छा है कि मैं हज़ूर-ए-अनवर से मिल सकूँ, लेकिन यहाँ बहुत सारे लोग हैं, सम्भवतः यह मेरे लिए संभव न हो।

एक छात्रा ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा : हज़ूर-ए-अनवर के भाषण ने हमें एक नवीन ऊर्जा प्रदान की है। यहाँ आकर मुझे गर्व की अनुभूति हो रही है। हज़ूर-ए-अनवर ने कहा कि हम सभी इंसान हैं और वे यह बताना चाहते थे कि जब हम सभी एक जैसे मनुष्य हैं तो फिर हमारे बीच किसी प्रकार की नफ़रत के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता। फिर आपने यह भी कहा कि हमें आज अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए कार्य करना है। मेरे लिए ये बातें अत्यंत विश्वासवर्धक सिद्ध हुईं। यह भाषण अत्यंत प्रेरणादायक था।

कैप्टन जोसेफ़ कॉन्गर (Joseph Conger) अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं:

मेरा कुछ समय से जमाअत से संपर्क है और यह बहुत ही सहयोगी जमाअत है। यह कार्यक्रम अत्यंत सफल रहा। हज़ूर-ए-अनवर का भाषण अत्यंत प्रभावशाली था। एक शांतिपूर्ण समाज के लिए हमें उच्च नेतृत्व की आवश्यकता है, जैसा कि हज़ूर-ए-अनवर का व्यक्तित्व है।

सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट जॉन रॉबिन स्मिथ (John Robin Smith) ने कार्यक्रम के बाद अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा:

हज़ूर-ए-अनवर से मिलकर अत्यंत अच्छा लगा। डिनर के समय उनके निकट बैठना एक अत्यंत सम्मान की बात थी। और दूसरी ओर हज़ूर-ए-अनवर के भाई विराजमान थे। मेरी दोनों से अच्छी वार्ता हुई। मुझे लगता है कि शांति की स्थापना और अन्य धर्मों के प्रति सम्मान एक अत्यंत सुंदर संदेश था। मैंने पिछले चार वर्षों से देखा है कि अन्य धर्मों से संपर्क रखने से काफी लाभ हुआ है। हज़ूर-ए-अनवर ने जो शिक्षाएँ दी हैं, मैं समझता हूँ कि वे बातें समाज में शांति की स्थापना और उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगी। कभी-कभी हमारे समाज पर कठिन समय भी आता है, लेकिन अच्छे कार्य भी हो रहे हैं, जैसा कि आज का यह कार्यक्रम। मेरा मानना है कि ऐसे कार्यक्रम समाज में शांति स्थापित करने के लिए अनिवार्य हैं। हज़ूर-ए-अनवर का संदेश समाज में शांति के हर पहलू को समाहित करता है।

कार्यक्रम में एक पादरी फादर जो मैथ (Joe Math) भी सम्मिलित थे। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा:

मैं आपके खलीफा के व्यक्तित्व से अत्यंत प्रभावित हुआ हूँ। उनके आने से वातावरण पर एक विशेष प्रभाव छा गया था। उनका संदेश भी प्रेम और सच्चाई से परिपूर्ण था। आज मैंने अज़ान भी सुनी, जिसने मेरे हृदय पर गहरा प्रभाव डाला।

हज़ूर-ए-अनवर का संदेश अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह समयानुकूल कार्यक्रम था। हज़ूर-ए-अनवर के भाषण के दौरान मैं प्रत्येक बात से सहमत था, क्योंकि मैं बाल्टीमोर में कई बार अहमदिया मस्जिद गया हूँ और मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि जो हज़ूर-ए-अनवर ने कहा है, वह मैंने इन वर्षों में दूसरी मस्जिद में होते देखा है। अहमदिया मस्जिद सभी समुदायों के लिए खुली है। मैं कई बार शुक्रवार की नमाज़ में भी गया हूँ। जैसा कि खलीफा ने कहा, मैं उन बातों का प्रत्यक्ष गवाह हूँ। यह सारी बातें सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है। यहाँ विभिन्न धर्मों के लोग एकत्र हुए हैं और शांति की बात कर रहे हैं। यही वह बात है जिसकी आवश्यकता न केवल इस नगर को है, बल्कि सम्पूर्ण संसार को है। मैं खलीफा और अहमदिया जमाअत से अत्यंत प्रभावित हूँ और मेरी यह इच्छा है कि और भी अवसर आएँ जब अहमदिया जमाअत अपने व्यावहारिक उदाहरणों द्वारा समाज को शांतिपूर्ण बनाने में अपनी भूमिका निभाती रहे।

एक महिला अतिथि ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा:

सबसे पहले तो यह एक शानदार संध्या थी। हज़ूर-ए-अनवर का व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली है। आपके प्रत्येक वाक्य से मैं आनंदित हो रही थी। मैं कई बार अपने क्षेत्र की मस्जिद में जा चुकी हूँ। हज़ूर-ए-अनवर की बातें सुनकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि आप दिल से बोल रहे हैं। आप मस्जिद को शांति, प्रेम और भाईचारे का स्थल बता रहे थे और मैं इसकी साक्षी हूँ। यहाँ आकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। मैं अन्य वैश्विक नेताओं से भी मिल चुकी हूँ, किंतु हज़ूर-ए-

अनवर के व्यक्तित्व में एक विशेष आकर्षण है। आपकी बातें दिल से निकली हुई प्रतीत होती हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि उनमें कोई छुपा हुआ राजनीतिक उद्देश्य नहीं था। जो मुझे अत्यंत अच्छा लगा। आप जो कुछ कह रहे थे वह आपकी सच्ची भावना थी और अनुभव हो रहा था कि यह व्यक्ति जो कुछ कह रहा है वह उसके हृदय की पुकार है। हज़ूर-ए-अनवर अत्यंत स्नेही, सौम्य भाषी और वास्तव में विश्व में शांति के इच्छुक हैं, और उसमें कोई छुपा हुआ उद्देश्य या प्रयोजन नहीं है।

बाल्टीमोर की मेयर कैथरीन प्यू (Catherine Pugh) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा:

हज़ूर-ए-अनवर से मिलकर मुझे अत्यंत हर्ष हुआ। सबसे पहली बात जो मैंने उनके व्यक्तित्व में अनुभव की, वह यह थी कि उनकी उपस्थिति से एक आत्मिक वातावरण उत्पन्न हो जाता है। आपने शांति के विषय में जो बात कही है। वह आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। न केवल हमारे नगर में, बल्कि हमारे राज्य में और फिर समस्त अमेरिका तथा पूरी दुनिया में इस संदेश की अत्यंत आवश्यकता है। मेरा विश्वास है कि यह संदेश प्रत्येक व्यक्ति को सुनना चाहिए। यदि हम इसे सुनेंगे तो समझ पाएँगे कि दुनिया की समस्याओं का एकमात्र समाधान शांति ही है और हम एक-दूसरे से प्रेम करना सीखेंगे। मुझे आज यहाँ आकर और हज़ूर-ए-अनवर से मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई। हज़ूर-ए-अनवर ने जो सबको साथ लेकर चलने का संदेश दिया है, वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। हम जब वंचितों का ध्यान रखने के लिए कोई भी कदम उठाते हैं, तो उसका प्रभाव हम सभी पर पड़ता है। आपसी प्रेम और भाईचारे का संदेश हम सभी के लिए अत्यंत आवश्यक है। हमारे समाज में हथियार बहुत सामान्य हो गए हैं। हमें एक-दूसरे की शिक्षा-दीक्षा करनी है, एक-दूसरे को यह समझाना है कि जीवन मूल्यवान है, हमें इसका सम्मान करना चाहिए और एक-दूसरे के अधिकारों का ध्यान रखना चाहिए ताकि समाज में शांति स्थापित की जा सके।

एक न्यूरोलॉजिस्ट (Neurologist) रॉबर्ट ड्यूबेरी (Robert Dewberry) भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। उन्होंने कहा:

मैं यहाँ आकर अत्यंत प्रसन्न हुआ हूँ। आपके आध्यात्मिक नेता का भाषण अत्यंत उत्साहवर्धक और हृदयस्पर्शी था। खलीफा ने एक वैश्विक संदेश दिया है। यदि खलीफा के व्यक्तित्व को एक शब्द में वर्णित किया जाए तो उन्हें 'शांति की मूर्ति' कहा जा सकता है।

बाल्टीमोर काउंटी पुलिस विभाग से क्रिस केल (Chris Keyl) अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं:

आज का कार्यक्रम अत्यंत शानदार था। मैं 2015 से इस जमाअत को देख रहा हूँ और यह निरंतर प्रेम, सौहार्द और शांति का प्रचार कर रही है। आज पहली बार मैंने आपके इमाम से भी वही बातें सुनीं और मुझे यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि वास्तविक संदेश का स्रोत क्या है। आपके इमाम के महान व्यक्तित्व से यह अच्छाइयाँ निकलती हैं और फिर हर स्तर पर एक-एक अहमदी में समाहित होती हैं और वे उन्हें व्यावहारिक रूप से सिद्ध करते हैं। आपकी यहाँ उपस्थिति अत्यंत लाभकारी है। बीते कुछ वर्षों से यहाँ की परिस्थितियाँ कुछ विषम रही हैं और शांति स्थापित करने वाले संस्थानों को कुछ समुदायों से चुनौतियों का सामना रहा है। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि इतनी बड़ी हस्ती यहाँ आई हैं और सबको शांति का संदेश दिया है और सबको साथ लेकर चलने की बात की है। हज़ूर-ए-अनवर के व्यक्तित्व की विशेष बात उनकी विनम्रता और नम्रता है।

एक अन्य अतिथि ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा:

मुझे इस कार्यक्रम से पूर्व भी हज़ूर-ए-अनवर से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। मैंने आपके व्यक्तित्व में विनम्रता देखी है। जैसे ही हज़ूर-ए-अनवर पधारे, मुझे आपकी छवि अत्यंत प्रभावशाली और गरिमामयी प्रतीत हुई। आप हर व्यक्ति की बात को ध्यान से सुनते हैं। आपसे मिलकर यह अनुभव होता है कि आप मानव जाति के लिए सच्ची सहानुभूति रखते हैं।

... एक महिला ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा : मैं हज़ूर-ए-अनवर के पास नहीं थी और स्क्रीन पर पहली बार उन्हें देखा। उन्हें देखते ही ऐसा प्रतीत हुआ मानो उनके अस्तित्व से खुदा तआला का प्रकाश प्रकट हो रहा हो। मैंने बहुत से लोगों को इस प्रकार की टिप्पणी करते हुए देखा है और मैं स्वयं इसकी साक्षी हूँ। उनकी उपस्थिति में खुदा तआलीय प्रकाश का अवतरण होता प्रतीत होता है।

... मिस्टर चक हार्ट (सार्जन्ट, बाल्टीमोर काउंटी) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा : जमाअत-ए-अहमदिया के खलीफा का भाषण अत्यंत विवेकपूर्ण और प्रभावशाली था, जिसमें उन्होंने एकता, समाज में शांति की स्थापना और मुसलमानों की मस्जिद के वास्तविक उद्देश्य पर प्रकाश डाला। खलीफा ने उन आपत्तियों और भ्रांतियों का भी उत्तर दिया जो आज के समाज में मुसलमानों के विषय में फैलाई जाती हैं। खलीफा के भाषण से मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि वास्तव में ज्ञान ही सच्ची शक्ति है जिससे अज्ञानता दूर होती है।

... मिस मैरी मारूचची ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा : मैं आपकी जमाअत के शिक्षा विभाग के लिए सम्मान चिन्ह तैयार करती हूँ, अतः मेरा पहले से ही जमाअत से परिचय है। हज़रत खलीफ़तुल मसीह को MTA पर तो देखा था, लेकिन आज पहली बार उन्हें प्रत्यक्ष देख कर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। हज़ूर ने जो संदेश अपने भाषण के माध्यम से हमें पहुँचाया है वह अत्यंत सुंदर और इस नाज़ुक समय के बिल्कुल अनुकूल है।

... मिस्टर रस एडवर्ड्स (सरकारी I.T. ठेकेदार) ने कहा : आज मैंने पहली बार जमाअत-ए-अहमदिया के कार्यक्रम में भाग लिया। आपके खलीफा का संदेश बहुत अच्छा लगा जिसमें उन्होंने ग़ैर-मुस्लिमों को आश्वस्त किया कि अहमदिया जमाअत की यह मस्जिद इस नगर में शांति का एक केन्द्र सिद्ध होगी।

... मिस ग्रेस बायरली ने कहा : मैं एक सेवानिवृत्त प्रोफेसर हूँ और तीस वर्षों तक यहूदियों और मुसलमानों के साथ काम कर चुकी हूँ। आज इस्लाम के खलीफा को देखकर और उनका भाषण सुनकर ऐसा प्रतीत हुआ मानो हमारी कैथोलिक समुदाय के धार्मिक नेता पोप हमसे मुख़ातिब हों। खलीफा का भाषण ऐसा जान पड़ता था जैसे अंधकार के पर्दों को चीर रहा हो। अतः मैं आशा करती हूँ कि लोग खलीफा का भाषण सुनकर अज्ञानता को त्यागकर इस नए प्रकाशमान युग में प्रवेश करेंगे।

... मिस एन एचपी (नर्स) ने अपने भाव इन शब्दों में प्रकट किए : आपके खलीफा का भाषण सुनने से पहले मैंने उनके बारे में इंटरनेट पर जानकारी प्राप्त की थी। इसलिए मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि खलीफा की शख़्सियत वैसी ही कोमल और उत्तम चरित्र वाली है जैसी मैंने पढ़ी थी। खलीफा का भाषण सहज था किन्तु हृदयों पर विशेष प्रभाव डालने वाला था। जो संदेश उन्होंने हमें दिया है यदि उस पर अमल किया जाए तो निश्चित रूप से हमारे नगर और पूरे समाज में शांति स्थापित की जा सकती है।

... मिस्टर बिल मिलन (सेवानिवृत्त प्रेस्बिटेरियन पादरी) ने कहा : आज के इस कार्यक्रम में आपकी जमाअत की ओर से जो मेहमाननवाज़ी हुई, उससे मैं अत्यंत प्रभावित हुआ हूँ। आपके खलीफा का भाषण सुनकर अच्छा लगा कि आप लोग धर्म के विषय में खुले दिल से संवाद करने को तैयार हैं। साथ ही खलीफा ने उन समस्याओं का भी उल्लेख किया जिनसे मुस्लिम जगत में मुसलमान आज जूझ रहे हैं। भाषण के अंत में खलीफा का यह संदेश कि हमें मिलकर अपने कर्म और प्रार्थना के माध्यम से एकजुट होकर शांति की स्थापना के लिए प्रयास करने की आवश्यकता है। यह एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण संदेश है जिसमें हमारे संसार के टिके रहने की व्यवस्था है।

... मिस एलेन क्रॉफर्ड (सेवानिवृत्त हाई स्कूल शिक्षक) ने अपने विचार इन शब्दों में व्यक्त किए : खलीफा को देखकर मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि उनकी शख़्सियत की भाँति उनका संदेश भी पूर्णतः निष्कलंक और सच्चे भाव से परिपूर्ण है। खलीफा की विश्व में शांति स्थापना की जो कोशिशें हैं, वे हम सभी के लिए एक आदर्श हैं। एक बात जिससे मुझे दुख हुआ वह यह थी कि खलीफा को विशेष रूप से ग़ैर-मुस्लिम अतिथियों को यह आश्वासन देना पड़ा कि इस्लाम एक शांतिपूर्ण धर्म है और इससे डरने की कोई आवश्यकता नहीं। लेकिन मैं यह भी आशा करती हूँ कि हज़ूर इस बात से अवगत हैं कि हमारी बहुसंख्या इस्लाम को वास्तव में शांतिप्रिय धर्म ही मानती है।

... मिस कैरल राइस ने कहा : आज इस्लाम के खलीफा का भाषण सुनकर और उन्हें देखकर मुझे एक विशेष सम्मान की अनुभूति हो रही है कि खुदा तआला का एक प्रिय सेवक आज हमसे संवाद कर रहा है, जो केवल और केवल

शांति की शिक्षा देता है।

... मिस मैरी ऐलेन वैनी ने कहा : आज के इस कार्यक्रम से यह बात स्पष्ट हो गई है कि इस्लाम वास्तव में अपने नाम की भाँति ही एक शांति पसंद धर्म है। इस्लाम के खलीफा जिस ढंग से भाषण करते हैं और लोगों से मिलते हैं उससे यह सिद्ध होता है कि वे अत्यंत निर्मल हृदय के स्वामी हैं। खलीफा की बातें हृदयों पर विशेष प्रभाव डालती हैं, जिसे शब्दों में व्यक्त कर पाना कठिन है। मैं आशा करती हूँ कि हमारे बाल्टीमोर नगर में आपकी यह मस्जिद 'बैतुस-समद' आशा और शांति की एक नई किरण लेकर आएगी।

... मिस बारबरा बाउम अपने विचार व्यक्त करते हुए कहती हैं : मैं आपकी मस्जिद में आ चुकी हूँ। यह एक अत्यंत सुंदर इमारत है। आपके खलीफा ने आज हमारे नगर के लोगों को जो संदेश दिया है वह अत्यंत सुंदर है। उन्होंने अपने भाषण के माध्यम से इस्लाम और मुसलमानों के विषय में समाज में फैलाई गई भ्रांतियों का अत्यंत सुंदर उत्तर प्रस्तुत किया है। यदि हम उनके बताए मार्ग पर चलें, तो मैं पूर्ण विश्वास से कहती हूँ कि यह दुनिया एक ऐसे घर के समान हो जाएगी जहाँ हम सब समान और एक होंगे।

... रब्बी एंड्रू बुश ने कहा : जमाअत-ए-अहमदिया के खलीफा का व्यक्तित्व अत्यंत सुंदर और गरिमामय है, जो तुरंत हृदय पर प्रभाव डालता है। खलीफा की शांति स्थापना के लिए जो अथक कोशिशें हैं, मैं उन्हें दिल की गहराइयों से सराहता हूँ।

21 अक्तूबर 2018, रविवार
(वॉशिंगटन से प्रस्थान एवं ह्यूस्टन में पधारना)

प्रातः 6:15 बजे मान्यवर हज़रत खलीफ़तुल मसीह पाँचवें ने "बैतुर्रहमान" नामक मस्जिद में पधारकर प्रातःकालीन उपासना का संचालन किया। उपासना के उपरांत आपने अपने निवास स्थान की ओर प्रस्थान किया।

प्रातःकाल आपने कार्यालयीन पत्राचार, निवेदनों तथा प्रतिवेदनों का अवलोकन किया तथा आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया।

कार्यक्रमानुसार आज वॉशिंगटन से ह्यूस्टन की यात्रा निर्धारित थी। ठीक दोपहर 12 बजे आप अपने निवास से बाहर पधारे। इस अवसर पर समाज के अनेक स्त्री-पुरुष आपको विदाई देने हेतु उपस्थित थे। आपने अपना हस्त उठाकर सभी को शांति का अभिवादन दिया और एकत्र लोगों के साथ प्रार्थना की। इसके उपरांत काफिला वॉशिंगटन के डलेस हवाई अड्डे की ओर प्रस्थान कर गया।

12 बजकर 45 मिनट पर आप हवाई अड्डे पर पधारे। यूनाइटेड एयरलाइंस के वरिष्ठ अधिकारियों ने आपका स्वागत किया और आपको विशेष विश्राम कक्ष में ले जाया गया। दोपहर 2 बजे विमान में प्रवेश हुआ और 2:35 पर यूनाइटेड एयरलाइंस की उड़ान संख्या UA 484 वॉशिंगटन के डलेस हवाई अड्डे से ह्यूस्टन के जॉर्ज बुश अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए रवाना हुई।

विमान के उड़ान भरने के कुछ ही समय पश्चात पायलट कक्ष से यह उद्घोषणा हुई कि परम श्रद्धेय मिर्ज़ा मसरूर अहमद इस विमान में यात्रा कर रहे हैं और हम उनका हार्दिक स्वागत करते हैं। आपके परिचय में यह कहा गया कि आप समस्त विश्व में शांति, धार्मिक स्वतंत्रता और सहिष्णुता के प्रचार में संलग्न एक सच्चे विश्व-शांति दूत हैं।

लगभग तीन घंटे पंद्रह मिनट की उड़ान के उपरांत विमान ह्यूस्टन के स्थानीय हवाई अड्डे पर उतरा। ह्यूस्टन का समय वॉशिंगटन से एक घंटा पीछे है। विमान से उतरते समय आपका स्वागत संयुक्त राज्य अमेरिका के उपाध्यक्ष (संगठनात्मक) डॉक्टर नसीम रहमतुल्ला तथा ह्यूस्टन के विदेश मामलों के सचिव डॉक्टर अता उर रब ने किया। ह्यूस्टन नगर के महापौर के प्रतिनिधि ने भी स्वागत में भाग लिया।

विशेष प्रोटोकॉल की व्यवस्था के अंतर्गत आपको हवाई अड्डे से बाहर लाया गया और 5:15 पर आपको समाज के केंद्र 'मस्जिद बैतुस्समीअ' की ओर ले जाया गया।

यात्रा के दौरान पुलिस के छह मोटरसाइकिल सवार सुरक्षा अधिकारी काफिले के आगे चल रहे थे, जो राजपथ को अवरोधमुक्त करते हुए सभी आने-जाने वाले मार्गों को अस्थायी रूप से अवरुद्ध कर रहे थे। लगभग 25 मिनट की यात्रा के पश्चात, 5:40 बजे आप 'मस्जिद बैतुस्समीअ', ह्यूस्टन पधारे।

आपके स्वागत हेतु न केवल ह्यूस्टन की स्थानीय इकाई के सदस्य उपस्थित थे, अपितु ऑस्टिन, टेनेसी, बाल्टिमोर, बे पॉइंट, बॉस्टन, डैलस, शिकागो, जॉर्जिया, फोर्ट वर्थ, केंटकी, लॉस एंजेलिस, मियामी, लॉरेल तथा सिल्वर स्प्रिंग जैसे स्थानों से समाज के अनेक स्त्री-पुरुष लम्बी यात्राएँ कर वहाँ पहुँचे थे।

टेनेसी से आने वाले सदस्यों ने 830 मील की दूरी बारह घंटे में, जॉर्जिया से आने वालों ने 850 मील की दूरी तेरह घंटे में तथा केंटकी से आने वालों ने 1050 मील की दूरी सोलह घंटे में वाहन द्वारा तय की।

बाल्टिमोर से विमान द्वारा आने वाले सदस्यों ने साढ़े तीन घंटे तथा बे पॉइंट और बॉस्टन से आए अतिथियों ने चार घंटे की हवाई यात्रा कर कार्यक्रम में भाग लिया।

इसी प्रकार मियामी, लॉस एंजेलिस, लॉरेल, सिल्वर स्प्रिंग और वॉशिंगटन से अनेक परिवार व सदस्य साढ़े तीन घंटे की उड़ान भरकर स्वागत के लिए ह्यूस्टन पहुँचे थे।

इसके अतिरिक्त कनाडा और जर्मनी से भी कुछ सदस्य अत्यन्त लम्बी यात्रा कर वहाँ पहुँचे थे। स्वागत करने वालों की कुल संख्या 700 से अधिक थी।

जैसे ही आपका वाहन 'मस्जिद बैतुस्समीअ' के मुख्य द्वार से भीतर प्रविष्ट हुआ, वहाँ उपस्थित सभी स्त्री-पुरुषों ने अत्यधिक उत्साहपूर्वक जयघोष किया। बालिकाएँ स्वागत गीत गा रही थीं। हर व्यक्ति अपने दोनों हस्तों को ऊँचा उठाकर आपको भावविभोर स्वागत अर्पित कर रहा था। वहाँ का वातावरण अत्यन्त उल्लासपूर्ण था। उस समाज के लिए यह एक अत्यन्त शुभ एवं मंगलमय दिवस था। यह पहली बार था जब आपके पावन चरण ह्यूस्टन की धरती पर पड़े। हर व्यक्ति आनंद एवं अपार प्रसन्नता से भर गया था। आपने सभी के नारों का हाथ हिलाकर उत्तर दिया और कुछ समय के लिए विश्रामगृह में पधार गए

22 अक्टूबर 2018, सोमवार

ह्यूस्टन से प्रस्थान तथा ग्वाटेमाला में पधारना

प्रातः 6:30 बजे मान्यवर हज़रत खलीफ़तुल मसीह पंचम ने 'मस्जिद बैतुस्समीअ' में पधार कर प्रातःकालीन उपासना का संचालन किया। उपासना के उपरांत आप अपने निवास स्थान लौट आए।

आज के कार्यक्रमानुसार, ह्यूस्टन से मध्य अमेरिका के राष्ट्र ग्वाटेमाला के लिए प्रस्थान निर्धारित था। यह मान्यवर का किसी भी मध्य अमेरिकी देश की ओर प्रथम यात्रा थी।

7:40 पर आपने निवास से बाहर पदार्पण किया। विदाई हेतु पुरुष और महिलाएँ मस्जिद के बाहरी प्रांगण में एकत्र थे। आपने प्रार्थना करवाई और काफ़िला ह्यूस्टन हवाई अड्डे के लिए प्रस्थान कर गया।

आपके आगमन से पूर्व ही सामान की जांच तथा बोर्डिंग पास की समस्त औपचारिकताएँ पूर्ण की जा चुकी थीं। 8:15 पर आप हवाई अड्डे पर पधारे। वहाँ यूनाइटेड एयरलाइंस के वरिष्ठ कर्मचारियों ने आपका स्वागत किया। विशेष प्रोटोकॉल के अंतर्गत आप ने आव्रजन की प्रक्रिया पूर्ण की और फिर विशिष्ट अतिथि कक्ष में पधारे।

9:45 पर आपने विमान में प्रवेश किया। यूनाइटेड एयरलाइंस की उड़ान संख्या UA 1751 प्रातः 10:40 पर ह्यूस्टन से ग्वाटेमाला सिटी हवाई अड्डे की ओर रवाना हुई।

विमान के उड़ान भरने के पश्चात पायलट कक्ष से उद्घोषणा की गई कि हमारे विमान में परम श्रद्धेय मिर्ज़ा मसरूर अहमद यात्रा कर रहे हैं। आप अमेरिका की यात्रा पर हैं। हम उनका हार्दिक स्वागत करते हैं। वे अमेरिका में सांसदों तथा सीनेट सदस्यों से भेंट करेंगे। वे शांति के एक सच्चे अग्रदूत हैं और अब ग्वाटेमाला भी पधार रहे हैं।

लगभग ढाई घंटे की यात्रा के उपरांत, ग्वाटेमाला के स्थानीय समय अनुसार दोपहर 12:10 पर विमान ग्वाटेमाला सिटी हवाई अड्डे पर उतरा। ग्वाटेमाला का समय ह्यूस्टन से एक घंटा पीछे है।

जब आप विमान से बाहर पधारे, तब माननीय कैप्टन माजिद अहमद खान

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 10 July 2025 Issue No. 23

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

ने आपका स्वागत करने का सौभाग्य प्राप्त किया। उन्हीं की देखरेख में 'ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट अमेरिका' के अंतर्गत 'नासिर चिकित्सालय' का निर्माण पूर्ण हुआ है, जिसका उद्घाटन इस यात्रा के दौरान होना है।

इसके पश्चात ग्वाटेमाला समाज के प्रमुख और प्रचार प्रभारी माननीय अब्दुल सत्तार खान तथा ग्वाटेमाला समाज के महासचिव श्री डेविड गोंजालेस ने आपका स्वागत किया।

इसके पश्चात, एक विशेष प्रबंध के तहत आप एक विशिष्ट अतिथि कक्ष में पधारे, जहाँ आव्रजन की प्रक्रिया पूर्ण की गई। तत्पश्चात आप हवाई अड्डे से बाहर पधारे और 'पोर्ता होटल' की ओर प्रस्थान किया। यह होटल, जो राजधानी ग्वाटेमाला सिटी से लगभग 40 किलोमीटर दूर अंतिगुआ नगर में स्थित है, राजधानी के समीपवर्ती जुड़वां नगर जैसा है। पुलिस वाहन और मोटरसाइकिल सवार सुरक्षा अधिकारी काफ़िले को सुरक्षा प्रदान करते हुए अग्रसर हो रहे थे।

आपके वाहन के पीछे भी एक सुरक्षाकर्मी वाहन उपस्थित था, जिसकी देखरेख एक सेवानिवृत्त सैन्य जनरल कर रहे थे।

लगभग एक घंटे की यात्रा के उपरांत, दोपहर 2:00 बजे आप पोर्ता होटल पधारे, जहाँ समाज के पुरुष, महिलाएँ, बच्चे एवं बालिकाएँ हर्षोल्लासपूर्वक आपके स्वागत हेतु उपस्थित थे। लोगों ने नारे लगाए, बालिकाएँ अपनी स्थानीय भाषा में स्वागत गीत तथा प्रार्थनाएँ प्रस्तुत कर रही थीं।

स्वागत करने वालों में ग्वाटेमाला के स्थानीय सदस्य एवं नवागंतुक अनुयायियों के अतिरिक्त मेक्सिको, इक्वाडोर, होंडुरास, पनामा, कोस्टा रिका, अल साल्वाडोर, पैराग्वे और बेलीज़ से पधारे नवमतावलंबी भी सम्मिलित थे। इसके अतिरिक्त अमेरिका और कनाडा से भी बड़ी संख्या में सदस्य वहाँ उपस्थित थे।

आपने हाथ उठाकर सभी को 'सलामुन अलैकुम' कहा और होटल के भीतर पधार गए।

होटल में प्रार्थना के लिए एक सभागार आरक्षित किया गया था। 4:50 पर आपने पधार कर दोपहर और सायंकाल की संयुक्त उपासना का संचालन किया।

इसके पश्चात कार्यक्रमानुसार 5:15 पर 'मस्जिद बैतुल औवल' (ग्वाटेमाला) के लिए प्रस्थान हुआ। लगभग 35 मिनट की यात्रा के उपरांत 5:50 पर आप वहाँ पधारे, जहाँ ग्वाटेमाला के स्थानीय सदस्य और मध्य एवं दक्षिण अमेरिका के विविध देशों से आए हुए प्रतिनिधियों ने अत्यंत भावविभोर स्वागत किया। बालिकाओं ने अपनी स्थानीय भाषा में स्वागत गीत प्रस्तुत किए।

आपने सभी को हाथ उठाकर 'सलामुन अलैकुम' कहा और मिशन भवन में पधारे।

इसके पश्चात आपने मस्जिद और मिशन भवन के परिसर का अवलोकन किया और आवासीय खंड को भी देखा। मस्जिद के बाह्य क्षेत्र में पुरुषों और महिलाओं के लिए पृथक-पृथक भोजन व्यवस्था की गई थी और बैठने का स्थान भी सुनिश्चित किया गया था। आपने इस विषय में जानकारी प्राप्त की।

मस्जिद के बाह्य क्षेत्र में आगे की निर्माण योजना के विषय में भी आपने जानकारी ली। ग्वाटेमाला समाज के प्रमुख ने निवेदन किया कि भवन के निचले भाग में पूर्ववर्ती चिकित्सा केंद्र को अतिथि गृह में परिवर्तित किया गया है। प्रस्ताव है कि वहाँ तीन आवासीय अपार्टमेंट बनाए जाएँ। एक एकल कक्षीय एवं दो द्विकक्षीय। इस पर आपने निर्देश दिया कि देखा जाए कि पुराने निर्माण को हटाकर नया बनाना है अथवा उसी में परिवर्तन कर पुनर्निमाण करना है। लंदन से फाएज़ साहब आकर इसका अवलोकन करेंगे।

(क्रमशः...)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
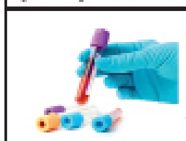
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad